राजस्थान की कला एवं संस्कृति

BY – S.R. जाणी

क्रम संख्या	टॉपिक का नाम
1.	लोक वाद्ययंत्र
2.	लोक नाट्य
3.	लोक नृत्य
4	दुर्ग
5.	हवेलियाँ
6.	महल
7.	छतरियाँ
8.	बावड़ियाँ
9.	हस्तकला
10.	संगीत एवं साहित्य संस्थान
11.	वेशभूषा
12.	आभूषण
13.	कुप्रथाएं
14.	राजस्थानी बोलियां
15.	जनजातियाँ
16.	संत सम्प्रदाय
17.	लोक देवता
18.	लोक देवियाँ
19	चित्रकला
20.	आस्था स्थल
21.	राजस्थानी साहित्य

लोकवाद्य

➢ तत् वाद्ययंत्र :–

- ♣ रावणहत्था
  - आधे कटे नारियल से बनाया जाता है।
- ♣ कैनरा
- ♣ सुरिन्दा
- ♣ कामायचा
  - प्रमुख कलाकार – साकर खाँ (2012 में पद्मश्री पुरस्कार दिया गया)
- ♣ दुकाका
- ♣ जंतर
  - देवनारायण जी की फड़ का वाचन
- ♣ वीणा
- ♣ भपंग
  - प्रमुख कलाकार – जहूर खान मेवाती
- ♣ चिकारा
- ♣ सुरमण्डल
- ♣ रबाब/रबाज
- ♣ एकतारा
- ♣ गूजरी
- ♣ सारंगी
  - प्रमुख कलाकार – रामनारायण चौधरी एवं सुल्तान खान
- ♣ सारंगी के प्रकार –
  - 1. धानी सारंगी
  - 2. सिंधी सारंगी
  - 3. गुजरातन सारंगी
  - 4. डेढ़ पसली सारंगी
  - 5. जोगिया सारंगी – पूर्वी राजस्थान में जोगियों द्वारा बजाई जाती है।

➢ सुषिर वाद्ययंत्र :–

❖ **सूत्र** – कसम से अब पूनमो बाँ सतु खा रहे हैं।
पेली बोली कोनी

- ♣ करणा
- ♣ सतारा
- ♣ मशक
- ♣ अलगोजा
  - राजस्थान का राज्य वाद्य यंत्र।
  - प्रमुख कलाकार – रामनाथ चौधरी, धोधे खान (माँगता, बाड़मेर)
  - रामनाथ चौधरी नाक से अल्गोजा बजाते थे।
- ♣ बांकिया
- ♣ पूंगी
- ♣ नड़ (लम्बी बांसुरी जैसा)
  - लम्बी बाँसुरी प्रमुख कलाकार :– करणा भील।
- ♣ नागफणी
- ♣ मोरचंग
  - इसे 'ज्यूहॉर्प' भी कहते हैं।
- ♣ बाँसरी – हरिप्रसाद चौरसिया
- ♣ शहनाई (नफीरी) – बिस्मिल्लाह खान
- ♣ सुरनई – पेपे खान (जैसलमेर)
- ♣ तुरतई
- ♣ पेली
- ♣ बोली
- ♣ काणी

➢ घन वाद्ययंत्र :–

- ♣ श्रीमण्डल
- ♣ झांझ
- ♣ रमझोळ – घुंघरूओं की पट्टी
- ♣ मंजीरा
- ♣ झालर
- ♣ लेजिम
- ♣ भरणी
- ♣ थाली
- ♣ घुँघरू
- ♣ हाकल
- ♣ घुरालियो
  - कालबेलियों का वाद्ययंत्र
- ♣ खड़ताल
  - प्रमुख कलाकार – गाजी खाँ बरना (जैसलमेर)
  - खड़ताल का जादूगर – सिदिक खाँ मागणियार (झाँपाली गाँव, बाड़मेर)
- ♣ पीर घंटा

www.skresultpoint.com

➢ **अवनद्ध वाद्ययंत्र :–**

- ♣ माँदल
- ♣ पखावज – पंडित पुरूषोत्तम दास।
- ♣ ढ़ोलक
- ♣ नगाड़ा
- ♣ चंग
- ♣ धौसा
- ♣ माठ – पाबूजी के पवाड़े (लोकगाथा) गाते समय।
- ♣ माटे
- ♣ डेरू
- ♣ नौबत – मंदिरों एवं महलों के द्वार पर बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र।
- ♣ डमरू
- ♣ ढफड़ी
- ♣ दमामा
- ♣ टामक
- ♣ ताशा – मोहर्रम के अवसर पर।

लोक नाट्य

➢ **लीलाएँ :–**

❖ **रामलीला –**

- ■ सवारी की राम लीला – जुरहरा (भरतपुर)
- ■ मूक अभिनय पर आधारित रामलीला – बिसाऊ
- ■ ढ़ाई कड़ी दोहे की रामलीला – मांगरोल (बारां)
- ■ दर्शकों द्वारा धनुष तोड़े जाने की रामलीला – अटरू
- ■ सनकादियों की रामलीला – घोसुण्डा (चित्तौड़गढ़)
- ■ गौर की रामलीला – आबू रोड़ (सिरोही)

❖ **रासलीला –**

- ■ राजस्थान में रासलीला का प्रमुख केन्द्र फुलेरा (जयपुर) है।
- ■ रासलीला के कलाकार स्वरूप कहलाते हैं।

➢ **गंवरी लोक नाट्य – मेवाड़ (भील समुदाय)।**

- ➢ अन्य नाम – राई लोक नाट्य
- ➢ यह सबसे प्राचीन लोक नाट्य है।
- ➢ इसे लोकनाट्यों का आधारस्तंभ कहा जाता है।
- ➢ यह रक्षाबंधन के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर 40 दिन तक चलता है।
- ➢ यह सुबह से सायं तक चलता है।
- ➢ यह लोक नाट्य भस्मासुर की कथा पर आधारित है।
- ➢ राई (शिव) बुड़िया, झामट्या एवं खटकुड़िया पात्रों का संबंध गवरी लोक नाट्य से है।
- ➢ गवरी लोक नाट्य पर आधारित भानू भारती ने पशु गायत्री नाटक लिखा था।
- ➢ गोमा मीणा, कालू कीर, खाड़लिया भूत, शेर सूअर की लड़ाई आदि नाटिकाओं का संबंध गवरी लोक नाट्य से है।

➢ **चारबैंत लोकनाट्य – टोंक।**

- ➢ वाद्ययंत्र :– डफ/ढफ
- ➢ इस लोकनाट्य की शुरूआत टोंक के नवाब फेज्जुला खान के समय अब्दुल करीम खान ने की थी।

www.skresultpoint.com

➢ **रम्मत लोकनाट्य – रमने वाला।**

- ➢ शुरूआत – जैसलमेर से।
- ➢ वर्तमान में रम्मत बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- ➢ बीकानेर में रम्मत का खेल लकड़ी के पाटों पर खेला जाता है।
- ➢ खिलाड़ी – खेलार।
- ➢ तेज कवि – जैसलमेर।
- ➢ इन्होंने स्वतंत्रता बावनी ग्रंथ लिखा था। इस ग्रंथ को गाँधीजी को भेंट किया था।
- ➢ इन्होंने श्री कृष्णा कंपनी के नाम से रम्मत का अखाड़ा शुरू किया था।

➢ **नौटंकी लोकनाट्य – पूर्वी राजस्थान।**

- ➢ इसकी शुरूआत डीग (भरतपुर) निवासी भूरीलाल ने की थी।
- ➢ हाथरस शैली की नौटंकी भरतपुर की प्रसिद्ध है।
- ➢ गुलाल बाई एवं कृष्णा कुमारी का संबंध नौटंकी कला से है।

➢ **स्वांग लोकनाट्य :– बहुरूपिया कला।**

- ➢ प्रमुख कलाकार – जानकीलाल भांड (भीलवाड़ा) – इसे मंकीमैन के नाम से जाना जाता है।
- ➢ परशुराम (केलवाड़ा, उदयपुर)

➢ **फड़ – शाहपुरा (भीलवाड़ा)**

- ➢ प्रमुख कलाकार /जनक – श्रीलाल जोशी

	फड़	वाचन	वाद्य यंत्र
1.	पाबूजी की फड़	भील/थोरी/नायक	रावणहत्था
2.	रामदेवजी की फड़	कामड़ भोपे	रावणहत्था
3.	देवनारायणजी की फड़	गुर्जर भोपे	जंतर
4.	रामदला–कृष्णदला की फड़	भाट भोपे	वाद्ययंत्र नहीं
5.	भेंसासुर की फड़	नहीं होता है	वाद्ययंत्र नहीं

- ➢ सबसे लोकप्रिय फड़ – पाबूजी की फड़।
- ➢ सबसे लंबी फड़ – देवनारायणजी की फड़।
- ➢ सबसे छोटी फड़ – देवनारायणजी की फड़।
- ➢ 1992 में देवनारायण जी फड़ पर डाक टिकट जारी किया गया।

➢ **तमाशा लोक नाट्य – जयपुर।**

- ♣ जयपुर में इसकी शुरूआत सवाई प्रतापसिंह के समय बंशीधर भट्ट ने की थी।
- ♣ तमाशा मूल रूप से महाराष्ट्र का था।
- ♣ रामसिंह द्वितीय ने तमाशा कलाकारों को गुणीजन खाने (संगीत–केन्द्र) में प्रवेश की अनुमति दी थी।

➢ **ख्याल लोकनाट्य – खेल।**

- ♣ **कुचामणी ख्याल – कुचामन (नागौर)।**
  - ■ प्रवर्तक/जनक – लच्छीराम।
- ♣ **चिड़ावा/शेखावटी ख्याल – नानूराम चिड़ावा**
- ♣ **जयपुरी ख्याल – जयपुर।**
  - ■ इसमें महिलाओं की भूमिका महिलाएँ निभाती है।
- ♣ **ढ़प्पाली ख्याल – अलवर।**
- ♣ **अली बख्शी ख्याल – अलवर।**

♣ **हैला ख्याल – दौसा।**
- जनक – सायर हैला।
- वाद्ययंत्र – नौबत।

♣ **कन्हैया ख्याल – भरतपुर।**
- इसे रसिया दंगल ख्याल भी कहा जाता है।
- कन्हैया ख्याल का मुख्य पात्र मेड़िया कहलाता है।

♣ **तुर्रा–कलंगी ख्याल – चित्तौड़गढ़।**
- तुर्रा –शिव, कलंगी – पार्वती।
- इसकी शुरूआत चंदेरी (मध्यप्रदेश) से शाह अली पीर एवं तुकनगीर ने की थी।
- चित्तौड़गढ़ से इसकी हम्मीद बेग एवं सहेडू सिंह ने की थी। प्रमुख कलाकार – चेतनराम, ताराचंद एवं ओंकारसिंह।

♣ भवानी नाट्यशाला – झालावाड़।

लोक नृत्य

❖ **जनजातियों के नृत्य :–**

➢ **सहरिया जनजाति के नृत्य –**
- शहर का शिकारी इन्द्रपरी को झालकर लहंगा छीन लेता है तथा उसे बीस वर्ष तक पहनता है।
- शिकारी नृत्य – पुरूष प्रधान नृत्य।
- इन्द्रपरी नृत्य
- झेला नृत्य
- लहंगी नृत्य
- बीसवा नृत्य – केवल महिलाओं द्वारा।
- सांग नृत्य

➢ **भील जनजाति के नृत्य**
- गंगैराम हाथी पर बैठकर युद्ध मैदान के चारों ओर घुमकर दो चक्र लगाकर नेजा फहरा देते हैं।
- गवरी
- गैर – होली के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाता है।
- हाथीमना – विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाने वाला।
- युद्ध
- घुमरा
- द्विचक्री
- नेजा –
  - होली के तीन दिन बाद शुरू होता है। युग्ल नृत्य

➢ **गरासिया जनजाति के नृत्य –**
- रामोजी गरासिया वांकल मां के सामने ज्वार चढ़ाकर गर्व महसूस कर रहे थे।
- रायण
- मोरिया
- गौर
- वालर –
  - यह नृत्य महिलाओं व पुरूषों द्वारा अर्द्धवृत्ताकार घेरे में किया जाता है।
  - यह नृत्य बिना वाद्ययंत्र के किया जाता है।
- कूद –
  - बिना वाद्ययंत्र के नृत्य किया जाता है।
- लूर
- मांदल
- ज्वारा
- गर्वा

➢ **कालबेलिया जनजाति के नृत्य :–**
- बाईपास हो गई।
- बांगड़िया –
  - कालबेलिया महिलाएँ भीख माँगते समय करती है।
- ईंडोणी
- पणिहारी
- शंकरिया
- प्रमुख कलाकार महिला – गुलाबो सपेरा।
- कालबेलिया नृत्य को 2010 में विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।
- वाद्ययंत्र – घुरालियो, खंजरी

➢ **कथौड़ी जनजाति के नृत्य :–**
- मावजी होली पर कत्था लाकर खाते हैं।
- मावलिया
- होली
- लावणी

➢ **मेव जाति के नृत्य :– पूर्वी राजस्थान – MR^2**
- रणबाजा – युग्ल नृत्य
- रतवई

➢ **कंजर जाति के नृत्य :–**
- धाकड़
- चकरी – महिला कलाकार – शांति, फिल्मा, फुल्मा।

➢ **गूजर जाति के नृत्य :–**
- चरी नृत्य – किशनगढ़ (अजमेर)
  - कलाकार – सुनिता रावत, मोहनसिंह गौड़, फलकु बाई।

❖ **व्यावसायिक नृत्य –**

➢ **तेरहताली नृत्य –**
- बाबा रामदेवजी के मेले के दौरान किया जाने वाला नृत्य।
- यह नृत्य बैठकर किया जाता है।
- इस नृत्य को प्रसिद्धि दिलाने का कार्य माँगी बाई ने किया था।

➢ **कच्छी घोड़ी नृत्य – शेखावाटी।**
- इस नृत्य के दौरान झांझ वाद्य यंत्र बजाया जाता है।
- यह नृत्य केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है।

➢ **भंवाई नृत्य – मेवाड़।**
- भवाई नाटक सबसे पहले बाघोजी जाट ने लिखा था।
- कलाकार – कजली, कुसुम, द्रोपदी, तारा शर्मा, दयाराम भील, सांगीलाल सांगड़िया, कृष्णा व्यास।
- शांता गाँधी ने भवाई लोक नृत्य पर आधारित 'जस्मा ओडन' नाटक लिखा था।

❖ **धार्मिक नृत्य –**

www.skresultpoint.com

- **घूमर नृत्य –**
  - राजस्थान का राज्य नृत्य।
  - यह रजवाड़ी नृत्य है।
  - इसे नृत्यों की आत्मा कहा जाता है।
  - गणगौर के अवसर पर सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है।
  - इस नृत्य की शुरूआत भील समुदाय ने की थी।
  - गणगौर घूमर नृत्य अकादमी – 1986 ई.।
  - घूमर नृत्य की विशेष चाल को सवाई कहते हैं।
- **कत्थक नृत्य –**
  - राजस्थान का शास्त्रीय नृत्य।
  - इस नृत्य को मंगलमुखी नृत्य के नाम से जाना जाता है।
  - इस नृत्य की शुरूआत जयपुर से भानूजी महाराज ने की थी।
- **चाक च्यानवी नृत्य – शेखावाटी।**
  - गणेश चतुर्थी के अवसर पर किया जाता है।

❖ **क्षेत्रीय नृत्य –**

- बिन्दोरी नृत्य – झालावाड़।
- ढ़ोल नृत्य – जालौर।
  - यह सांचलिया संप्रदाय में 'थाकना शैली' में किया जाता है।
  - इसे प्रसिद्धि दिलाने का कार्य जयनारायण व्यास ने किया था।
  - विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाता है।
- डांग नृत्य – नाथद्वारा (राजसमंद)
  - होली के अवसर पर किया जाने वाला युगल नृत्य।
  - वाद्ययंत्र – ढ़ोल, मांदल, थाली।
- चंग नृत्य – शेखावाटी
- ढफ नृत्य – शेखावाटी
  - गीदड़ नृत्य – सेठ सेठानी, दुल्हा–दुल्हन, शिकारी आदि नाटक दिखाये जाते हैं।(केवल पुरूष)
- अग्नि नृत्य – कतरियासर (बीकानेर)।
  - जसनाथी सम्प्रदाय का नृत्य।
- लांगुरिया नृत्य – कैलादेवी (करौली)।
- नाहर नृत्य – मांडल (भीलवाड़ा)।
  - शाहजहाँ के समय शुरूआत।
- भैरव नृत्य – ब्यावर (अजमेर)।
  - होली के अवसर पर बादशाह की सवारी के आगे भैरव नृत्य किया जाता है।
- ढ़ोला मारू नृत्य – झालावाड़।
- चरकुला नृत्य – भरतपुर।
- बमरसिया नृत्य – भरतपुर।
  - बम – बड़ा नगाड़ा।
- कबूतरी नृत्य – चुरू।
- घुड़ला नृत्य – मारवाड़
  - शुरूआत सातलदेव के समय।
  - बालिकाएँ अपने सिर पर छिद्रित मटका रखकर नृत्य करती हैं।

❖ **अन्य**

- डांडिया नृत्य – मारवाड़
- कच्छी घोड़ी – केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है।
- पेंजवा नृत्य – वांगड़ प्रदेश
  - दीवाली के अवसर पर।

दुर्ग

www.skresultpoint.com

- स्थापत्य कला का जनक – महाराणा कुंभा
- कविराजा श्यामलदास के अनुसार मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों का निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया।
- शुक्रनीति के अनुसार दुर्ग – 09 प्रकार।
  - एरण दुर्ग – ऐसे दुर्ग जिसके चारों और झाडियाँ एवं कंकड़ पत्थर हो।
  - पारिख दुर्ग – वे दुर्ग जिनके चारों ओर खाई हो। जैसे–लोहागढ़ (भरतपुर)
  - पारिध दुर्ग – वे दुर्ग जिसके चारों ओर दीवार (प्राचीर) हो।
  - वन दुर्ग – वे दुर्ग जिसके चारों ओर वन की अधिकता हो।
  - जल (औदक) दुर्ग – चारो ओर जल राशि हो। जैसे – गागरोन, भैंसरोड़गढ़, लोहागढ़।
  - धान्वन दुर्ग – चारों ओर मरूभूमि हो। जैसे – सोनारगढ़ (जैसलमेर), जूनागढ़, भटनेर, नागौर दुर्ग।
  - गिरि दुर्ग – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। सर्वश्रेष्ठ उदाहरण – तारागढ़ (अजमेर)।
  - सैन्य दुर्ग – सैनिकों के निवास स्थल।
  - सहाय दुर्ग – राजा के सगे–संबंधी एवं वीर योद्धाओं का निवास।
- वर्ष 2013 में राजस्थान के छः दुर्गों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

चित्तौड़गढ़ कुंभलगढ़	चिकु
गागरोन जैसलमेर	गाजर
रणथंभौर आमेर	आम

- **चित्तौड़गढ़ दुर्ग – चित्तौड़गढ़**
  - गंभीरी एवं बेड़च नदियों के संगम पर मेसा पठार पर स्थित।
  - प्रारंभिक नाम – चित्रकुट इसे राजस्थान का गौरव एवं दुर्गों का सिरमौर कहा जाता है।
  - यह राज्य का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट हैं।
  - निर्माण – चित्रांग (चित्रांगद) मौर्य।
  - यह क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा दुर्ग है।
  - चित्तौड़गढ़ दुर्ग में तीन साके हुए थे।
  - प्रवेश द्वार – सात।
  - रावत बाघसिंह की छतरी पांडन पोल के पास बनी हुई है।
  - भैरव पोल एवं हनुमान पोल के मध्य जयमल मेड़तिया व वीर कल्ला राठौड़ की छतरी बनी हुई है।
  - रामपोल के पास में फत्ता सिसोदिया की छतरी बनी हुई हैं।
  - जैन कीर्ति स्तंभ – चित्तौड़गढ़ दुर्ग में।
    - इसका निर्माण 13 वीं सदी में जीजाक द्वारा करवाया गया।

दर्शनीय स्थल :–

- कुंभास्वामी मंदिर –
  - निर्माण – कुंभा द्वारा।
- त्रिभुवन नारायण मंदिर –
  - निर्माण – परमार राजा भोज, इसे भोज मंदिर भी कहा जाता है।
  - पुनर्निर्माण – मोकल ने करवाया था इसलिए इसे मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर भी कहा जाता है।
- सतबीस देवरी – जैन मंदिर
- तुलजा भवानी मंदिर –
  - शिवाजी की आराध्य देवी।
- रानी पद्मिनी महल

- भामाशाह हवेली
- नवलखा भंडार
- नवलखा बुर्ज
- श्रृंगार चंवरी – यह शांतिनाथ जैन मंदिर है।
  - निर्माण – वेलका ने।
- गोरा–बादल महल।
- फतेह प्रकाश संग्रहालय।

कुंभलगढ़ – राजसमंद

- इसका निर्माण महाराणा कुंभा ने शिल्पी मंडन के सहयोग से 1448–1458 के मध्य करवाया।
- कुंभलदेवी (कुंभा की पत्नी) की याद में करवाया।
- इस दुर्ग के स्थान पर एक प्राचीन दुर्ग था, जिसका निर्माण मौर्य राजा सम्प्रति ने करवाया, जिसे मच्छेन्द्र दुर्ग कहा जाता था।
- कुंभलगढ़ का ऊपरी भाग कटारगढ (बादल महल) कहलाता है, यहाँ महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था।
- अबुल फजल ने दुर्ग की ऊँचाई को देखकर लिखा कि – ''यह इतना ऊँचा है कि ऊपर देखने पर माथे की पगड़ी गिर जाती है।''
- कर्नल टॉड ने कुंभलगढ़ को राजस्थान का एस्ट्रूकन कहा।
- कुंभलगढ़ रियासती दुर्गों का सिरमौर दुर्ग है।
- महाराणा उदयसिंह का राज्याभिषेक एवं महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक समारोह कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ।
- उदा ने अपने पिता कुंभा की हत्या मामदेव कुण्ड के निकट की थी, यहाँ कुंभा की छतरी बनी हुई है।
- महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध की योजना कुंभलगढ़ दुर्ग में बनाई थी।
- पन्ना धाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को बनवीर से बचाकर कुंभलगढ़ दुर्ग पहुंची।
- इस समय यहाँ का किलेदार आशा देवपुरा था।
- किरत बारी – उदयसिंह को बनवीर से बचाकर महल से बाहर ले जाने वाला व्यक्ति।
- महाराणा सांगा एवं उड़ना पृथ्वीराज का बचपन यहाँ बिता था।
- उड़ना पृथ्वीराज की 12 खंभों की छतरी यहाँ बनी हुई है। मेवाड़ के राजाओं की संकटकालीन राजधानी (शरणस्थली) कुंभलगढ़ थी।

दर्शनीय स्थल –

- मामादेव मंदिर –
  - इसे कुंभश्याम मंदिर कहा जाता है।
- नीलकण्ठ महादेव मंदिर –
  - टॉड ने इस मंदिर को यूनानी शैली का बताया।
- झालीरानी का मालिया
- झालीबाव बावड़ी

गागरोन दुर्ग – झालावाड़

- यह कालीसिंध व आहु नदियों के संगम पर स्थित है।
- यह दुर्ग नदियों के जल से तीनों ओर से घिरा हुआ है।
- यह दुर्ग बिना नींव के खड़ा है।
- श्रेणी – जल दुर्ग, जल दुर्गों में सर्वश्रेष्ठ दुर्ग।
- उपनाम – गर्गराटपुर, डोडगढ़, धुलरगढ़।
- **दुर्ग के साके –**
  - प्रथम साका – 1423 ई.।
    - ✓ शासक – अचलदास खींची।
    - ✓ आक्रमणकारी – होशंग शाह (आसफ खां गौरी)।
    - ✓ जौहर – रानी उमा दे।
    - ✓ इस घटना की जानकारी शिवदास गाढ़ण के ग्रंथ अचलदास खींची री वचनिका में मिलता है।
  - दूसरा साका – 1444 ई.।
    - ✓ शासक – पाल्हणसी।
    - ✓ आक्रमणकारी – महमूद खिलजी–I (मालवा का)।
    - ✓ महमूद खिलजी प्रथम ने दुर्ग को जीतकर दुर्ग का नाम मुस्तफाबाद रखा।

दर्शनीय स्थल –

- संत पीपा का छतरी।
- संत मीठेशाह की दरगाह।
  - इन्हें संत हमीमुद्दीन चिश्ती के नाम से जाना जाता है।
  - इस दरगाह में बुलन्द दरवाजा स्थित है जिसका निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।

सोनारगढ़ दुर्ग – जैसलमेर।

- श्रेणी – धान्वन दुर्ग।
- निर्माण – जैसल भाटी ने 12 जुलाई 1155 ई. के दिन इंसाल ऋषि के आशीर्वाद से नींव रखी।
- यह दुर्ग गोरहरा (त्रिकुट पहाड़ी) पर स्थित हैं, इसलिए इसे गोरहरा गढ़ कहा जाता है।
- इस किले को स्वर्णगिरि एवं जैसलमेर को स्वर्णनगरी के नाम से जाना जाता है।
- यह दुर्ग पीले पत्थरों से निर्मित हैं।
- सोनारगढ़ को रेगिस्तान का जहाज, राजस्थान का अंडमान एवं गलियों का दुर्ग कहा जाता है।
- **दुर्ग के साके –**
  - प्रथम साका –
    - ✓ शासक – मूलराज प्रथम
    - ✓ आक्रमणकारी – अलाउद्दीन खिलजी।
  - दूसरा साका –
    - ✓ शासक – दूदा।
    - ✓ आक्रमणकारी – फिरोज तुगलक
  - अर्द्ध साका –
    - ✓ शासक – लुणकरण
    - ✓ आक्रमणकारी – अमीर अली शाह (लुणकरण का धर्मभाई था।)
    - ✓ इस समय कैसरिया तो हुआ था, लेकिन जौहर नहीं।

दर्शनीय स्थल –

- सर्वोत्तम विलास महल
- गज विलास
- जवाहर विलास महल

रणथंभौर दुर्ग – सवाई माधोपुर

- इसका निर्माण चौहान शासकों ने करवाया था।
- रणथंभौर का प्राचीन नाम – रणस्तम्भपुर।
- अबुल फजल ने कहा कि, ''अन्य सभी दुर्ग नंगे है, यह बख्तरबंद है।''
- अमीर खुसरो ने लिखा – ''आज कुफ्र का गढ़ इस्लाम का घर हो गया।''

दर्शनीय स्थल –

- त्रिनेत्र गणेश मंदिर

www.skresultpoint.com

- न्याय की छतरी –
  - जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासन की याद में सुपुत्र हम्मीर देव ने निर्माण करवाया।
  - यहाँ मुगलों की टकसाल थी।
- सुपारी महल –
  - यह हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई समुदाय का आस्था स्थल हैं।
- जौरा – भौरां की छतरी।
- जोगी महल।
- पीर सदरूद्दीन की दरगाह।
- पदमला तालाब।
- नवलखा दरवाजा
- इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं।

आमेर दुर्ग – जयपुर।

- निर्माण – मानसिंह।
- यह प्रथम दुर्ग है, जो हिन्दू एवं मुस्लिम शैली में निर्मित है।
- मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम (मुअज्जम) ने आमेर को जीतकर दुर्ग का नाम मोमिनाबाद रखा।

दर्शनीय स्थल –

- सुहाग (सौभाग्य) मंदिर।
- सुखमहल।
- शीश महल –
  - राज्य का सर्वश्रेष्ठ शीश महल।
  - इसकी दीवारों पर काँच की जड़ाई की गई।
- दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास
  - निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह।

मेहरानगढ़ दुर्ग – जोधपुर।

- यह दुर्ग जोधपुर के चिड़ियाटूंक (पंचेटिया) पहाड़ी पर स्थित है।
- निर्माण – राव जोधा ने करणी माता के आशीर्वाद से 1459 ई. में दुर्ग की नींव रखी थी।
- इतिहासकार रूडयार्ड किपलिंग ने लिखा था कि – "इस दुर्ग का निर्माण देवताओं एवं परियों ने करवाया था।"
- जैकलिन कैनेडी ने मेहरानगढ़ दुर्ग को आठवां अजूबा बताया।
- पं. जवाहरलाल नेहरू ने जैसलमेर रियासत को आठवां अजूबा बताया।
- प्रमुख तोपें – गजनी खां, शंभूबाण, किलकिला, धूड़धाणी, जमजमा, मीर बक्श, नुसरत, गजक, बिच्छुवाहन, कड़क बिजली, गुब्बार, रहस्य कला।

दर्शनीय स्थल –

- भूरे खां की मजार।
- मानसिंह पुस्तक प्रकाश संग्रहालय।
- चौखेलाव महल।

भटनेर दुर्ग – हनुमानगढ़।

- निर्माण – 285 ई. (तीसरी सदी) में भूपत भाटी द्वारा (भट्टी)।
- यह राज्य का सबसे प्राचीन दुर्ग है।
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमणों का सामना करने वाला दुर्ग।
- साका – 1398 ई. में।
  - शासक – दुलचन्द भाटी।
  - आक्रमणकारी – तैमूर।
  - यहां हिन्दू महिलाओं के साथ–साथ मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया था।
- तैमूर ने अपनी आत्मकथा तुजुक–ए–तैमूरी में लिखा कि – "मैंने पूरे हिन्दुस्तान में इतना मजबूत दुर्ग नहीं देखा।" यह दुर्ग 52 बीघा भूमि में फैला है तथा इसमें 52 बुर्ज बने हुए हैं।

बयाना दुर्ग – भरतपुर।

- निर्माण – 1040 ई., विजयपाल यादव ने करवाया।
- उपनाम – श्री पंथ, शोणितपुर, सुल्तान कोट, बाणासुर दुर्ग, विजयमंदिर गढ़, भादानक, नील वाला दुर्ग।
- भीमलाट – दुर्ग में लाल पत्थरों से निर्मित आठ मंजिला स्तंभ।
  - निर्माण – समुद्रगुप्त के समय विष्णुवर्धन ने पुण्डरीक यज्ञ की समाप्ति पर करवाया।
  - यहां राज्य का सबसे प्राचीन विजय स्तंभ है।

तिमनगढ़ दुर्ग – करौली

- उपनाम – तमनगढ़/त्रिभुवनगढ़।
- इस दुर्ग परिसर में पान की खेती होती है।
- पान का खेत – बजेड़ा कहलाता है।

सिवाना दुर्ग – बाड़मेर।

- इसे कुमट दुर्ग कहा जाता है।
- यह दुर्ग हल्देश्वर (छप्पन की पहाड़ियां) पहाड़ी पर स्थित है।
- निर्माण – 10 वीं शताब्दी में वीर नारायण पंवार ने करवाया।
- उपनाम – अणखला किला कुमट दुर्ग जालौर दुर्ग की कुंजी मारवाड़ के शासकों की संकटकालीन राजधानी।
- **सिवाना के साके –**
- प्रथम साका – 1308 ईस्वी।
  - शासक – शीतलदेव (सातलदेव)।
  - सेनापति – भावला।
  - आक्रमणकारी – अलाउद्दीन खिलजी सेनापति – कमालुद्दीन गुर्ग।
  - अलाउद्दीन खिलजी ने भांवला को अपने साथ मिला दिया था।
  - रानी मैणादे के नेतृत्व में जौहर हुआ था।
  - अलाउद्दीन खिलजी ने दुर्ग की जिम्मेदारी कमालुद्दीन गुर्ग को सौंपकर दुर्ग का नाम खैराबाद कर दिया।
- दूसरा साका – 1587 ईस्वी।
  - शासक – वीर कल्ला रायमलोत।
  - आक्रमणकारी – मोटाराजा उदयसिंह। (अकबर के कहने पर)
  - जौहर हाड़ी रानी (जसमा दे) के नेतृत्व में।

जालौर दुर्ग – जालौर, सूकड़ी नदी के किनारे।

- यह कनकांचल पहाड़ी पर स्थित है।
- उपनाम – सोनगढ़, सुवर्णगिरि, जाबालिपुर।
- परमार राजा धारावर्ष एवं मुंज का संबंध इसी दुर्ग से है।
- इतिहासकार हसन निजामी ने लिखा कि – "इस दुर्ग को कोई भी आक्रमणकारी नहीं खोल पाया।"
- अलाउद्दीन खिलजी ने कान्हड़देव के समय जालौर पर आक्रमण करके दुर्ग का नाम जलालाबाद कर दिया।

दर्शनीय स्थल –

- सरस्वती कण्ठाभरण संस्कृत पाठशाला

www.skresultpoint.com

- निर्माण – परमार राजा भोज (मालवा)
- अलाउद्दीन ने इसे तुड़वाकर इसका नाम अलाउद्दीन मस्जिद (तोप मस्जिद) रखा था।

➢ मैग्जीन दुर्ग – अजमेर।

- ➢ यह दुर्ग अकबर द्वारा निर्मित है।
- ➢ इसे अकबर का किला भी कहा जाता है।
- ➢ यह दुर्ग मुगलों एवं अंग्रेजों के समय शस्त्रागार था।
- ➢ हल्दीघाटी युद्ध की योजना (अकबर द्वारा) इसी दुर्ग में बनी थी।
- ➢ इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत टॉमस रॉ ने 10 जनवरी 1616 को मैग्जीन दुर्ग में व्यापार की अनुमति हेतु मुगल बादशाह जहाँगीर से मुलाकात करी।
- ➢ टॉमस रॉ राजपुताना आने वाला प्रथम अंग्रेजी राजदूत था।
- ➢ 1908 ई. से इस दुर्ग में राजपुताना म्युजियम का संचालन हो रहा है।
- ➢ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा 30 वर्षों तक (लगभग) राजपुताना म्युजियम के क्यूरेटर (अध्यक्ष) रहे थे।

➢ तारागढ़ दुर्ग – अजमेर

- ➢ यह दुर्ग जमीन स्तर से लगभग 1300 फीट ऊँचा है।
- ➢ उपनाम – अजयमेरू, गढ़ बिठली (बिठ्ली पहाड़ी पर होने के कारण)।
- ➢ उड़ना पृथ्वीराज की पत्नी ताराबाई के नाम पर दुर्ग का नाम तारागढ़ रखा।
- ➢ निर्माण – 1113 ई. में अजयराज ने अजमेर नगर की स्थापना करके दुर्ग का निर्माण करवाया।
- ➢ गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक ने इस दुर्ग को राज्य का जिब्राल्टर कहा।
- ➢ यह दुर्ग राज्य का प्रथम गिरि दुर्ग माना जाता है।
- ➢ सर्वाधिक स्थानीय (देशी) आक्रमणों का सामने करने वाला दुर्ग है।
- ➢ तारागढ़ दुर्ग के बुर्ज – 14 आर पार का अता, जानू, गुगड़ी, फूटी, बांदरा, ईमली, श्रृंगार चंवरी, खिड़की।
- ➢ शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह का जन्म इसी दुर्ग में हुआ था।

दर्शनीय स्थल –

- ➢ हजरत मीरान साहब की दरगाह –
  - इनके प्रिय घोड़े की मजार बनी हुई है।
- ➢ नाना साहब का झालरा

➢ अचलगढ़ दुर्ग – सिरोही।

- ➢ इस दुर्ग का निर्माण परमार राजाओं ने करवाया था।
- ➢ पुनः निर्माण – महाराणा कुंभा ने।

दर्शनीय स्थल –

- ➢ अचलेश्वर महादेव मंदिर।
- ➢ ओखा रानी का महल।
- ➢ मंदाकिनी कुण्ड।
- ➢ रसिया बालम की प्रतिमा।
- ➢ सावन–भादो झील।

➢ बसंतगढ़ दुर्ग (बसंती) – सिरोही।

- ➢ निर्माण – कुंभा ने।

➢ तारागढ़ दुर्ग – बूंदी।

- ➢ निर्माण – बरसिंह हाड़ा ने, 14 वीं सदी में (1354) में करवाया।
- ➢ कर्नल जेम्स टॉड ने बूँदी के राजमहलों को सर्वश्रेष्ठ बताया।
- ➢ इतिहासकार रूपयार्ड किपलिंग ने इस दुर्ग के महलों को भूत एवं प्रेतों द्वारा निर्मित बताया।
- ➢ गर्भगुंजन तोप – इसी दुर्ग में रखी हुई है।

दर्शनीय स्थल –

- ➢ छत्रशाल (शत्रुशाल) ने ऐतिहासिक रंगमहल का निर्माण करवाया था।

➢ जयगढ़ दुर्ग – जयपुर।

- ➢ यह ईगल (गरूड़) पहाड़ी पर स्थित है।
- ➢ उपनाम – चिल्ह का टीला।
- ➢ इस दुर्ग में तोप ढ़ालने का कारखाना था।
- ➢ एशिया की सबसे बड़ी तोप जयबाण इसी दुर्ग में रखी हुई है।
- ➢ इस तोप का निर्माण सवाई जयसिंह के समय हुआ।
- ➢ यह दुर्ग पानी के विशाल टांकों व गुप्त सुरंगों के लिए प्रसिद्ध है।

➢ नाहरगढ़ दुर्ग – जयपुर।

- ➢ निर्माण सवाई जयसिंह ने मराठाओं से सुरक्षा के लिए 1734 में करवाया।
- ➢ माधोसिंह द्वितीय ने अपनी प्रेमिकाओं (09) के लिए इस दुर्ग में 09 अलग–अलग महल बनवाये थे।
- ➢ इस दुर्ग को महलों का दुर्ग कहा जाता है।
- ➢ जगतसिंह द्वितीय ने अपनी प्रेमिका रसकपुर को इस दुर्ग में कैद किया था।

➢ कुचामन दुर्ग – नागौर।

- ➢ यह जागीरी किलों का सिरमौर है।

➢ लोहागढ़ दुर्ग – भरतपुर।

- ➢ निर्माण – सुरजमल ने 1733 ई. में करवाया।
- ➢ 1805 ई. में भरतपुर के राजा रणजीत सिंह ने अंग्रेज विरोधी मराठा सरदार यशवंत राव होल्कर को शरण दी थी।
- ➢ अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक ने दुर्ग को जीतने के लिए पाँच बार असफल प्रयास किए।
- ➢ लोहागढ़ दुर्ग का उत्तरी द्वार अष्टधातु से निर्मित है।
- ➢ यह दरवाजा जवाहरसिंह दिल्ली के लाल किले से लेकर आए थे।

दर्शनीय स्थल –

- ➢ किशोरी महल
- ➢ दादी माँ का महल
- ➢ लक्ष्मण मंदिर (जाट वंश के कुलदेवता)
- ➢ राजराजेश्वरी माता (कुलदेवी)

➢ जूनागढ़ दुर्ग – बीकानेर।

- ➢ जमीन का जेवर।
- ➢ निर्माण – 1488 ई. में राव बीका ने दुर्ग का निर्माण करवाया। जिसे बीका की टेकरी कहा जाता था।
- ➢ इस पुराने किले के स्थान पर लाल पत्थरों से भव्य दुर्ग जूनागढ़ का निर्माण रायसिंह ने करवाया। (1589–94 के मध्य)

www.skresultpoint.com

- रायसिंह जब दक्षिण भारत में बुरहानपुर अभियान पर थे उस समय अपने मंत्री कर्मचन्द को दुर्ग के निर्माण का आदेश दिया।
- उपनाम – गढ़चिंतामणि, रातीघाटी, तारामणि।
- इसमें 37 बुर्ज हैं।
- रायसिंह ने दुर्ग में सुरजपोल के पास जयमल मेड़तिया एवं फता सिसोदिया की गजारूढ़ प्रतिमाएं स्थापित करवाई, जो पहले आगरा दुर्ग में थी।
- जूनागढ़ दुर्ग पर रायसिंह प्रशस्ति को उत्कीर्ण करने वाला जईता था।
- गंगासिंह ने अपने पिता श्री लालसिंह की याद में लालगढ़ पैलेस का निर्माण करवाया।

चौमूं दुर्ग – जयपुर।

- उपनाम – रघुनाथगढ, धाराधारगढ़, चौमूहागढ़।

शेरगढ़ दुर्ग – धौलपुर।

- यह चम्बल नदी के किनारे स्थित है। यहां हुनहुकार तोप रखी हुई है।

शेरगढ़ (कोषवर्द्धन) दुर्ग – बारां।

भैंसरोड़गढ़ दुर्ग – चित्तौड़गढ़

- ♣ चम्बल एवं बामनी के संगम पर।
- इसे राजस्थान का वैल्लोर कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड ने कहा कि, –''मुझे यदि एक जागीर की पेशकश की जाये तो मैं भैंसरोड़गढ़ को चुनुंगा।''

नीमराणा दुर्ग – अलवर।

- इसे पंचमहल के नाम से जाना जाता है।

बाला किला – अलवर।

- यहां बाबर एक रात ठहरा था।
- सलीम सागर, सुरज कुण्ड दर्शनीय स्थल है।
- इस किले को कुंवारा किला भी कहते है।

कांकनवाड़ी का किला – अलवर।

- यहां औरंगजेब के भाई दाराशिकोह को कैद किया था।

शाहबाद दुर्ग – बारां।

- यहां 18 तोपों में से नवलबाण तोप प्रसिद्ध है, जो 19 फीट लम्बी है।

सज्जनगढ़ दुर्ग – उदयपुर।

- बांसदरा पहाड़ी पर स्थित है।
- इसका निर्माण मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह ने करवाया था।
- यहां वाणी विलास पैलेस है, इसे मानसून पैलेस के नाम से जाना जाता है।
- (कृष्ण विलास) इसे उदयपुर का मुकुटमणि कहा जाता है।

चुरू का किला –

- निर्माण – ठाकुर कुशलसिंह ने करवाया था।
- 1814 में जब बीकानेर की सेना ने दुर्ग पर आक्रमण किया तो उस समय शासक शिवसिंह ने अपनी रक्षा हेतु चाँदी के गोले बरसाये थे।

डीग का किला – डीग (भरतपुर)

- निर्माण – बदनसिंह ने।
- जल महलों की नगरी – डीग

नवलखा दुर्ग – झालरापाटन (झालावाड़)

- निर्माण – पृथ्वीसिंह झाला ने।

हवेली स्थापत्य

- वल्लभ संप्रदाय में मंदिर हवेली कहलाते हैं।
- हजार हवेलियों का शहर – बीकानेर
- सर्वाधिक हवेली भित्ति चित्रण – शेखावाटी

बीकानेर की हवेलियाँ :–

- बच्छावतों की हवेली
- रामपुरिया हवेली
- मोहता की हवेली

चुरू की हवेलियाँ :–

- सुराणाओं की हवेली –
  - 1100 दरवाजे एवं खिड़कियों की हवेली।
- दानचंद चौपड़ा की हवेली – सुजानगढ़
- मालजी का कमरा
- मंत्रियो की हवेली
- रामनिवास गोयनका की हवेली
- कन्हैयालाल बागल की हवेली
- शेखावटी की हवेलियाँ भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए इसे ओपन आर्ट गैलेरी कहा जाता है।

झुंझुनूं की हवेलियाँ :–

- ईसरदास मोदी की हवेली
- टीबड़े वालों की हवेली
- सोने–चाँदी की हवेली – महनसर
- भगतों की हवेली – नवलगढ़
- पोद्दार की हवेली – नवलगढ़
- लड़ियों की हवेली – मंडावा
- रामनाथ गोयनका की हवेली – मंडावा
- नाथूराम पोद्दार की हवेली – बिसाऊ

सीकर की हवेलियाँ :–

- चारचौक हवेली – लक्ष्मणगढ़
- चेतनराम की हवेली – लक्ष्मणगढ़
- पंचारी की हवेली – श्रीमाधोपुर
- ताराचंद रूईया की हवेली – रामगढ़ (सीकर)
- रामगोपाल पोद्दार की हवेली – रामगढ़ (सीकर)
- फतेहपुर (सीकर) :– फ्रांस के नदीन ला प्रेंस ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ति चित्रण को संरक्षित करने का सराहनीय कार्य किया था।

जोधपुर की हवेलियाँ :–

- राखी हवेली

www.skresultpoint.com

- पुष्य नक्षत्र हवेली

- **कोटा की हवेलियाँ :–**
  - झाला हवेली
- **फलौदी की हवेलियाँ :–**
  - लालचन्द ढड्ढा की हवेली

- **उदयपुर की हवेलियाँ :–**
  - बागोर हवेली – यहाँ राजस्थान की सबसे बड़ी पगड़ी रखी हुई है।
  - यहाँ 1986 में पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किया गया।
  - यहाँ कठपुतलियों का संग्रहालय है।

- **जैसलमेर की हवेलियाँ :–**
  - पटवों की हवेली – जैसलमेर की हवेलियाँ कलात्मक नक्काशीदार पत्थर की जालियों के लिए प्रसिद्ध है।
    - इस हवेली का निर्माण गुमानचन्द पटवा ने 1805 ई. के लगभग करवाया था।
  - नथमल की हवेली – इसका निर्माणा नथमल मेहता ने जैसलमेर के महाराज बैरीसाल के समय करवाया था।
  - सालिमसिंह की हवेली

राजस्थान के महल

- **माधवेन्द्र महल** – नाहरगढ़ दुर्ग
  - जयपुर यहाँ स्कल्प्चर पार्क विकसित किया गया है।
- **हवा महल – जयपुर।**
  - निर्माण – सवाई प्रतापसिंह के समय 1799 ई. में।
  - वास्तुकार – लालचंद उस्ता।
  - हवामहल का निर्माण लाल–गुलाबी पत्थरों से कृष्ण–मुकुट की आकृति में करवाया गया है।
  - हवामहल में 953 खिड़कियाँ एवं झरोखे हैं।
  - हवामहल में पाँच मंजिलें हैं।

मंजिल	मंजिल का नाम
1	शरद (प्रताप) मंदिर
2	रतन मंदिर
3	विचित्र मंदिर
4	प्रकाश मंदिर
5	हवा मंदिर

  - 1968 में इस महल को ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया गया।
  - 1983 से हवामहल में म्यूजियम का संचालन किया जा रहा है।
- **सिटी पैलेस – जयपुर**
  - इसका निर्माण सवाई जयसिंह ने वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य की देखरेख में करवाया था।
- **दीवान–ए–खास (सिटी पैलेस, जयपुर)**
  - यहाँ विश्व के सबसे बड़े चांदी के घड़े रखे हुए हैं।
  - इन्हें गंगाजलि कहा जाता है।
  - जयपुर महाराजा माधोसिंह द्वितीय 1902 में इंग्लैंड के राजा एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह में भाग लेने के लिए गए थे उस समय इन गंगाजलि में जल भरकर लेकर गये थे।
- **मुबारक महल – सिटी पैलेस, जयपुर।**
  - इसका निर्माण माधोसिंह द्वितीय ने मेहमानों के स्वागत के लिए करवाया था।
- **मुबारक महल – टोंक**
- **जल महल – जयपुर**
  - इन महलों का निर्माण सवाई जयसिंह ने अश्वमेघ यज्ञ करने वाले पुरोहितों के निवास हेतु करवाया था।
  - यह पाँच मंजिला जल महल मानसागर झील के बीच में बना हुआ है।
- **अल्बर्ट हॉल – जयपुर**
  - 1876 ई. में प्रिंस अल्बर्ट के जयपुर आगमन के समय जयपुर महाराजा रामसिंह द्वितीय ने अल्बर्ट हॉल का निर्माण करवाया था।
  - इसका विधिवत् उद्घाटन माधोसिंह द्वितीय के समय किया गया था।
  - यह राज्य का प्रथम राजकीय संग्रहालय है।
- **उम्मेद पैलेस – जोधपुर**
  - इसका निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत महाराजा उम्मेदसिंह ने करवाया था।
  - इसे छीतर पैलेस के नाम से भी जाना जाता है।
  - राज्य का सबसे बड़ा रियासती महल है।
  - यहाँ एक प्राचीन घड़ियों का संग्रहालय है।
- **अजीत भवन – जोधपुर।**
  - राज्य की प्रथम हैरिटेज होटल।
- **पंचमहला – बैराठ, जयपुर।**
  - इसका निर्माण आमेर के राजा मानसिंह ने अकबर के लिए करवाया था।
- **बनेड़ा महल – भीलवाड़ा**
- **अभेड़ा महल – कोटा**
- **जहाँगीर का महल – पुष्कर, अजमेर**
- **काठ का रैन बसेरा – झालावाड़**
  - इसका निर्माण राजा राजेन्द्रसिंह ने करवाया था।
- **खेतड़ी महल – झुंझुनूं**
  - इसका निर्माण भोपालसिंह ने करवाया था।
  - राजा अजीतसिंह के समय विवेकानंदजी ने खेतड़ी की यात्रा की थी।
  - इसे शेखावाटी का हवामहल कहते है।
- **धर्म स्तूप – चुरू**
  - इसे लाल घंटाघर के नाम से जाना जाता है।
- **एक थंभा महल – जोधपुर**
  - इसका निर्माण जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने करवाया था।
  - इसे प्रहरी मीनार के नाम से जाना जाता है।
- **एक थंभिया महल – डुँगरपुर**
  - इस महल के चारों ओर उदय विलास, लक्ष्मण विलास, विजय विलास एवं खुमाण विलास हैं।
- **अबली मीणी का महल – कोटा**
  - कोटा के शासक मुकुन्दसिंह हाड़ा ने अबली मीणी के लिए महल का निर्माण करवाया था।
  - इसे हाड़ौती का ताजमहल कहा जाता है।
- **जगमंदिर महल – उदयपुर**

www.skresultpoint.com

- पिछोला झील के निकट इसका निर्माण कर्णसिंह ने प्रारंभ करवाया था जो जगतसिंह प्रथम के समय में पूर्ण हुआ था।

➢ **जगनिवास महल – उदयपुर।**
- इसका निर्माण जगतसिंह द्वितीय ने करवाया था।

➢ **सुनहरी कोठी – टोंक**
- इसे 'जरनिगार' के नाम से भी जाना जाता है।
- इसका निर्माण टोंक के नवाब इब्राहिम अली ने करवाया था।

➢ **जूना पैलेस – डूंगरपुर**
- इस महल का निर्माण किले की भाँति किया गया है।

➢ **डीग के जलमहल – डीग, भरतपुर।**
- इन महलों का निर्माण बदनसिंह ने करवाया।
- डीग को जलमहलों की नगरी कहा जाता है।

राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ

➢ **84 खंभों की छतरी – बूँदी (देवपुरा गाँव)**
- इसका निर्माण बूँदी के राजा अनिरूद्ध सिंह ने धाभाई देवा की स्मृति में करवाया।

➢ **80 खंभों की छतरी – अलवर।**
- अलवर के महाराजा बख्तावरसिंह की रानी मूसी की याद में विनयसिंह ने इसका निर्माण करवाया था।
- इसे मूसी महारानी की छतरी कहा जाता है।

➢ **बड़ा बाग की छतरियाँ – जैसलमेर**
➢ **देवीकुण्ड की छतरियाँ – बीकानेर**
➢ **केसर बाग की छतरियाँ – बूँदी**
➢ **क्षारबाग की छतरियाँ – कोटा**
➢ **गैटोर की छतरियाँ – जयपुर**
- नाहरगढ़ दुर्ग की तहलटी में निर्मित जयपुर के राजाओं की छतरियाँ।

➢ **आहड़ की छतरियाँ – उदयपुर (आहड़)**
- यहाँ प्रथम छतरी अमरसिंह प्रथम की है।
- इन छतरियों को महासतियाँ के नाम से जाना जाता है।

➢ **जगन्नाथ कच्छवाह की छतरी – मांडल, भीलवाड़ा**
- यह 32 खंभों की छतरी है।

➢ **महाराणा सांगा की छतरी – मांडलगढ़, भीलवाड़ा**
➢ **महाराणा प्रताप की छतरी – बाडोली, (सलूम्बर) उदयपुर**
- 08 खंभों पर निर्मित।

➢ **जोधपुर के प्राचीन राजाओं की छतरियाँ मंडोर में हैं।**
➢ **कागा उद्यान की छतरियाँ – जोधपुर**
➢ **पंचकुण्ड की छतरियाँ – मंडोर, जोधपुर**
➢ **ब्राह्मण देवता की छतरी – जोधपुर**
➢ **मामा–भांजा की छतरी – मेहरानगढ़, जोधपुर**
- यह छतरी 'धन्ना–भींया'' की है।

➢ **संत रैदास की छतरी – चित्तौड़गढ़**
➢ **चेतक की छतरी – बलीचा गाँव, हल्दीघाटी, राजसमंद**
➢ **सेठ रामगोपाल पोद्दार की छतरी – रामगढ़, सीकर**
- यह शेखावाटी की सबसे बड़ी छतरी है।

➢ **नेड़ा की छतरी – अलवर**
➢ **टहला की छतरी – अलवर**
➢ **गोपालसिंह की छतरी – करौली**
➢ **पालीवालों की छतरियाँ – जैसलमेर**
➢ **अमरसिंह राठौड़ की छतरी – नागौर**
- 16 खंभों की छतरी

➢ **गौरा धाय की छतरी – जोधपुर**
- **इसका निर्माण अजीतसिंह ने करवाया था।**

➢ **दुर्गादास राठौड़ की छतरी – उज्जैन, मध्यप्रदेश**

राजस्थान की प्रमुख बावड़ियाँ

➢ बूँदी को बावड़ियों का शहर कहा जाता है।
➢ बूँदी एवं शेखावाटी बावड़ियों की स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है।

➢ **चाँद बावड़ी – आभानेरी, दौसा।**
♣ इसका निर्माण गुर्जर प्रतिहार काल में करवाया था।
♣ यह 64 फीट गहरी राज्य की सबसे बड़ी बावड़ी है।
♣ इस बावड़ी के पास हर्षद माता का मंदिर बना हुआ हैं।

➢ **त्रिमुखी (जया) बावड़ी – देबारी (उदयपुर)**
♣ मेवाड़ महाराणा राजसिंह की रानी रामरस दे ने 1675 ई. में बावड़ी का निर्माण करवाया था।

➢ **रानीजी की बावड़ी – बूँदी**
♣ इसका निर्माण अनिरूद्ध सिंह की रानी नाथावत ने करवाया था।
♣ इसे बावड़ियों का सिरमौर कहा जाता है।

➢ **नौलखा बावड़ी – डूँगरपुर।**
♣ इसका निर्माण डूँगरपुर के महारावल आसकरण की रानी प्रेमल दे ने करवाय था।

➢ हाड़ी रानी की बावड़ी – टोडारायसिंह नगर (टोंक)
➢ हाथी बावड़ी – जोधपुर
➢ कातन बावड़ी – जोधपुर
➢ एंजन बावड़ी – जोधपुर
➢ तापी बावड़ी – जोधपुर
➢ **झालरा** – जलस्रोज जो धार्मिक स्थलों के निकट बना होता है।
➢ महिला बाग का झालरा – जोधपुर
➢ तूरजी का झालरा – जोधपुर
➢ बहुजी का तालाब – जोधपुर
➢ मालदेव की रानी स्वरूप दे (मेवाड़) ने बनवाया था।
➢ दूध बावड़ी – सिरोही
➢ मृगा बावड़ी – सिरोही
➢ चम्पा बावड़ी – सिरोही
➢ लाहिणी बावड़ी – सिरोही
➢ मंदाकिनी बावड़ी – सिरोही
➢ पन्ना मीणा की बावड़ी – आमेर (जयपुर)
➢ मेड़तणी बावड़ी – झुंझुनूं
➢ नीमराणा बावड़ी – अलवर
➢ हर्षनाथ बावड़ी – सीकर
➢ काकाजी की बावड़ी – बूँदी
➢ बाटाडू का कुआँ – बाड़मेर
➢ इसे रेगिस्तान का जलमहल कहा जाता है।
➢ जेट सागर – जैसलमेर
➢ ब्रह्म सागर – जैसलमेर
➢ कोशिकराम कुण्ड – जैसलमेर

www.skresultpoint.com

- अमर सागर – जैसलमेर
- गड़ीसर – जैसलमेर
- देवयानी कुण्ड – देवयानी तीर्थस्थल, सांभर (जयपुर)
- धाभाई (देवा) कुण्ड – बूँदी
  - इसे जेलकुण्ड के नाम से भी जानते हैं।

हस्तकला एवं लोककला

- **पिछवाईयाँ – नाथद्वारा (राजसमंद)** भगवान श्री कृष्ण के जीवन से संबंधित।
- **बादले – जोधपुर** बादले जिंक से निर्मित होते हैं।
- **तबक – जयपुर**
- **कुंदन कला – जयपुर** आभूषणों में नगीनों की जड़ाई।
- **मीनाकारी – जयपुर**
  - ♣ आभूषणों पर धातु की पतली परत चढ़ाना।
  - ♣ यह कला आमेर के राजा मानसिंह प्रथम लाहौर से लेकर आये थे।
  - ♣ मीनाकरी का जादूगर – कूदरत सिंह
  - ♣ चाँदी की मीनाकारी – नाथद्वारा (राजसमंद)
- **कोफ्तगिरी – जयपुर**
  - ♣ फौलाद (कच्चा लोहा) की बनी वस्तुओं पर धातु की तारों से कलाकारी करना।
  - ♣ यह कला आमेर के राजा मानसिंह पंजाब से लेकर आये थे।
- **थेवा कला – प्रतापगढ़**
  - ♣ राज सोनी परिवार (नाथूजी सोनी) द्वारा काँच पर सोने की कारीगरी की जाती है।
- **धातु नगर – नागौर**
- **तीर कमान के लिए प्रसिद्ध स्थान – चंदूजी का गड़ा – बाँसवाड़ा, बोडीगामा – डूँगरपुर**

❖ **वस्त्र छपाई –**
- ♣ **अजरक प्रिंट – बाड़मेर**
- ♣ **मलीर प्रिंट – बालोतरा**
- ♣ **जाजम प्रिंट – आकोला (चित्तौड़गढ़)**
- ♣ **बगरू प्रिंट – जयपुर**
- ♣ **सांगानेरी प्रिंट – जयपुर**
- ♣ **रूपाहली सुनहरी छपाई – किशनगढ़, चित्तौड़ व कोटा**

- **दाबू पद्धति** – वस्त्र छपाई के दौरान जिस स्थान पर रंग नहीं लगाना होता है, उसे दबा दिया जाता है।
  - ♣ **मिट्टी का दाबू – बालोतरा**
  - ♣ **मोम का दाबू – सवाई माधोपुर** (इस दाबू को वार्तिक कहा जाता है।)
  - ♣ **अभ्रक का दाबू – भीलवाड़ा** अभ्रक की छपाई भोडल कहलाती है।
- **जरी कला – जयपुर**
  - ♣ इस कला को सवाई जयसिंह सूरत से लेकर आये थे।
  - ♣ कपड़े पर सोने–चाँदी की तारों से कलाकारी करना जरी कहलाता है।
- **पाव रजाई – जयपुर**
- **खेसले – लेटा गाँव (जालौर)**
- **नमदे – टोंक**
  - ♣ यह कला मूल रूप से ईरान की थी।
- **जट्पट्टी – जसोल, बालोतरा**
  - ♣ जिरोही एवं भाखला जटपट्टी से संबंधित है।
- **मिट्टी एवं मूर्तियों से संबंधित – टेराकोटा कला – मोलेला (राजसमंद)**
  - ♣ यहाँ अग्नि से पकाकर मिट्टी के खिलौने बनाये जाते हैं।
  - ♣ मोहनलाल का संबंध टेराकोटा कला से है।
- **रमकड़ा उद्योग – गलियाकोट (डूँगरपुर)**
  - ♣ यहाँ पत्थर के खिलौने बनाये जाते हैं।
  - ♣ नागौर का बु नरावता गाँव मिट्टी के खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है।
  - ♣ हरजी गाँव – जालौर यहाँ मामाजी के मिट्टी के घोड़े बनाये जाते है।
- **काष्ठकला – बस्सी (चित्तौड़गढ़)**
- **कठपुतली कला – उदयपुर एवं चित्तौड़गढ़**
  - ♣ कठपुतली आडू की लकड़ी से बनायी जाती है।
  - ♣ कठपुतली खेल नट जाति के लोग दिखाते हैं।
  - ♣ कठपुतली कला को प्रसिद्धि दिलाने का कार्य ''भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर'' के संस्थापक देवी लाल सामर ने किया था।
  - ♣ कठपुतलियों का संग्रहालय – उदयपुर गुड़ियाओं का संग्रहालय – जयपुर
- **बेवाण** – लकड़ी का बना सिंहासन जिस पर ठाकुर जी की प्रतिमा को रखकर जलाशय ले जाते हैं।
- **कावड़ कला** – लकड़ी से बनी हुई मंदिरनुमा आकृति। इसका प्रदर्शन भाट जाति के लोग करते हैं।
  - ♣ माँगीलाल मिस्त्री का संबंध कावड़ कला से है।
- **ऊस्ता कला/ मुनवती कला – बीकानेर**
  - ♣ ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी करना ऊस्ता कला कहलाती है।
  - ♣ इस कला की शुरूआत बीकानेर के राजा रायसिंह के समय हिस्सामुद्दीन ऊस्ता ने की थी।
- **मथैरणा कला – बीकानेर** मथैरणा जैन समुदाय है।
  - ♣ यह अपने आपको महात्मा कहते थे।
  - ♣ ये लोग राजाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाते थे।
  - ♣ इनको बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के समय संरक्षण दिया गया।
- **ब्लू पॉटरी (कामचीनी) – जयपुर।**
  - ♣ चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की गई कारीगरी ब्लू पॉटरी कहलाती है।
  - ♣ इस कला को जयपुर के शासक रामसिंह द्वितीय ने संरक्षण दिया था।
  - ♣ कृपालसिंह शेखावत (1974 में पद्म श्री) का संबंध ब्लू पॉटरी से है।
  - ♣ गोपाल सैनी एवं राजेश गोधा का संबंध ब्लू पॉटरी से है।
  - ♣ ब्लू पॉटरी का मूल स्थान पर्शिया (ईरान) था।
- **ब्लेक पॉटरी – कोटा**
- **कागजी पॉटरी – अलवर**
- **लाख का कार्य – जयपुर**
- **लाख की चुड़िया मोकड़ी कहलाती है।**

- **अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –**
- **टांकला** – सालावास (जोधपुर) दरी निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।

www.skresultpoint.com

- **बांधो एवं रंगों (बंधेज) कला** के लिए जयपुर प्रसिद्ध है। समुद्र लहर लहरिया – जयपुर
- मोती भारत कढ़ाई कला – जालौर
  - भरत, आरी, हुरम जी एवं सूफ कढ़ाई कला से संबधित है।
- टीवी रेडियो एवं अम्ब्रेला – फालना (पाली)
- **गलीचा** – राजस्थान में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर प्रसिद्ध है।
- **मलयगिरी वस्त्र छपाई – जयपुर** इसमें भूरे रंग का प्रयोग किया जाता है।
  - इस पद्धति से निर्मित कपड़े को लंबे समय तक सुगंधित रखा जा सकता है।
- **तारकशी के जेवर – नाथद्वारा (राजसमंद)**
- **सफेद संगमरमर की मूतियां – जयपुर**
- **काले संगमरमर की मूर्तियां – बाँसवाड़ा**
  - यहाँ सोमपुरा जाति के लोग कार्य करते हैं।

संगीत से संबंधित संस्थान

- **संगीत संस्थान – जयपुर**
  - ✓ स्थापना – 1950
- **संगीत नाटक अकादमी – जोधपुर**
  - ✓ स्थापना – 1957
- **राजस्थान ललित कला अकादमी – जयपुर**
  - ✓ स्थापना – 1957
- **राजस्थान रवीन्द्र रंगमंच सोसाइटी – जयपुर**
  - ✓ स्थापना – 1963
- **मदरसा–ए–हूनरी – जयपुर** स्थापना – 1857
  - ✓ जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित।
  - ✓ वर्तमान में इसका नाम 'राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट'' है।
- **रूपायन संस्थान – बोरून्दा (जोधपुर)**
  - ✓ स्थापना – 1960
  - ✓ संस्थापक – कोमल कोठारी
  - ✓ सहयोगी – विजयदान देथा
- **राष्ट्रीय कला मण्डल – जोधपुर** स्थापना – 1954
  - ✓ संस्थापक – गोवर्धन लाल काबरा
- **भारतीय लोक कला मण्डल – उदयपुर**
  - ✓ स्थापना 1952
  - ✓ संस्थापक – देवीलाल सामर
  - ✓ कटपुतलियों का संग्रहालय उदयपुर में है।
- **पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र – उदयपुर**
  - ✓ स्थापना – 1986
  - ✓ इसका अध्यक्ष राज्यपाल होता है।
  - ✓ इसमें चार राज्य शामिल है – राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं गोवा।
- **जवाहर कला केन्द्र – जयपुर**
  - ✓ स्थापना – 1993
  - ✓ वास्तुकार – चार्ल्स कोरिया
- **लोक संस्कृति शोध संस्थान – नगर श्री (चुरू)**
  - ✓ स्थापना 1964
  - ✓ संस्थापक – सुबोध कुमार अग्रवाल एवं गोविन्द कुमार अग्रवाल

- **मांड गायन शैली** – पश्चिमी राजस्थान की लोकप्रिय शैली है।
- कलाकार – अल्लाह जिलाई बाई (बीकानेर)
- गीत – केसरिया बालम गवरी देवी (पाली) मांगी देवी (उदयपुर)
- **तालबंदी लोक गायन शैली** – पूर्वी राजस्थान
- पटेल्या, बिंछिया, लालर – पहाड़ी लोक गीत
- रतनराणो, उमादे, घुघरी, केवड़ा – मरू प्रदेश के लोक गीत

वेशभूषा

- **पुरूषों के वस्त्र** –
- **पगड़ी** – प्रतिष्ठा का प्रतीक है।
  - मेवाड़ में पगड़ी बांधने वाले व्यक्ति को छाबदार कहा जाता था।
  - जसवंत शाही पगड़ी – जोधपुर
  - शाही पाग – जयपुर
  - खिड़किया पगड़ी – जोधपुर
  - अटपटी पगड़ी – मेवाड़
  - उदयशाही, अमरशाही, खंजरशाही एवं विजयशाही पगड़ी के प्रकार है।
  - खंगा पगड़ी का ही प्रकार है।
  - सिरपेच पगड़ी का आभूषण है।
  - मदील की पगड़ी – हीरे मोतियों से जड़ी हुई दशहरे के अवसर पर बाँधी जाती है।
  - मोठड़े की पगड़ी – यह पगड़ी विवाह के अवसर पर बाँधी जाती है।
- **टोपी** –
  - प्रकार – खाखसा उमा, चौखुलिया, दुपालिया।
- **अंगरखी** – शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला वस्त्र।
  - अंगरखी के प्रकार – बुगतरी, गाबा, गदर, मिरजई, काना, डगला।
- **जामा** – शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला वस्त्र।
- **चोगा** – अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।
- **अचकन** – अंगरखी का विकसित रूप।
- **आत्मसुख** – सर्दियों में पहना जाने वाला वस्त्र।
  - राज्य का सबसे बड़ा आत्मसुख सिटी पैलेस (जयपुर) में रखा हुआ है।
  - राज्य की सबसे बड़ी पगड़ी बागोर हवेली (उदयपुर) में रखी हुई है।
- **भाखला** – ओढ़ने का वस्त्र।
- **पछेवड़ा** – सर्दियों में ओढा जाने वाला वस्त्र।
- **खेसला** – सर्दियों में ओढ़ा जाने वाला वस्त्र।
  - खेसला लेटा गाँव, जालौर के प्रसिद्ध है।
- **ब्रिचेस** – चुड़ीदार पायजामा राजा–महाराजा शिकार खेलते समय पहनते थे।
- **ढ़ेपाड़ा** – आदिवासियों की तंग धोती।
- **खोयतू** – आदिवासियों की लंगोट

www.skresultpoint.com

➢ महिलाओं के वस्त्र –

- ♣ **दामणी** – मारवाड़ में ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी।
- ♣ **झिम्मी** – ओढ़नी फेरों के समय दुल्हन के मामा द्वारा ओढ़ायी जाने वाली मोटे किनारों वाली लाल–गुलाबी ओढ़नी।
- ♣ **पोमचा** – ओढ़नी का प्रकार
  - पीला पोमचा – पुत्र जन्म पर ओढ़ा जाता है।
  - गुलाबी पोमचा – लड़की के जन्म पर ओढ़ा जाता है।
- ♣ **मोठड़ा** – ओढ़नी का प्रकार ओढ़नी की लहरदार धारियां जब एक–दूसरे को काटती है तो उसे मोठड़ा कहा जाता है।
- ♣ **गोटा** – कपड़े को अधिक सुंदर बनाने के लिए की गई कारीगरी गोटा कहलाती है।
  - गोटे के प्रकार – लप्पा–लप्पी, किरण–बांकड़ी, मुकेश, गोखरू।
- ♣ **साड़ी** के प्रकार – चोल, निकोल, पट्ट, दुकुल, चोरसो, चीरपटोरी, चूंदड़ी, ओढ़नी, धोरावाली
  - कोटा डोरिया साड़ी – कैथुन (कोटा)
  - इसे राजस्थान की बनारसी साड़ी कहा जाता है।
  - जैनब की साड़ी – कोटा
- ♣ **धनक** – ओढ़नी का प्रकार।
- ♣ **धाबला** – ऊन का बड़ा लहंगा।
- ♣ **ताराभात, केरीभात, जवारभात** – आदिवासी महिलाओं की ओढ़नी।
- ♣ **कछाबू** – भील महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली साड़ी।
- ♣ **नांदणा** – भीलवाड़ा आदिवासियों का सबसे प्राचीन वस्त्र।
- ♣ **कटकी** – आदिवासी बालिकाओं की ओढ़नी।
- ♣ **राष्ट्रीय पोशाक** – जोधपुरी कोट–पेंट।

राजस्थानी आभूषण

❖ महिलाओं के आभूषण –

- ♣ **सिर या माथे के आभूषण** – टिकड़ा, मेंमद, रखड़ी, बोरला, टिडीभळको, गोफण, काचर।
- ♣ **नाक के आभूषण** – नथ, बारी, चून्नी, भवरिया, काँटा, फीणी, लटकण, लोंग, बुलाक, चोप।
- ♣ **कान के आभूषण** – सुरलिया, झूमका, झूमर, झेला, मुरकी, डुगला, कर्णफूल, ओगनिया, अंगोट्या, पीपलपत्रा।
- ♣ **दाँत के आभूषण** – रखन, चूंप।
- ♣ चौंप, नाक का आभूषण है।
- ♣ **गले के आभूषण** – झालर, तेवटियो, तिमणिया, मादलिया, पोत, सरी, हाँकर, कंठी, सोहनकंठी, आड, हमेल, चंपाकली, ठुस्सी, मंगलसूत्र, बजट्टी, तुलसी, हालरो, खुगाली।
- ♣ **बाजू/हाथ के आभूषण** – बलया, कतरिया, बाजूबन्द, भूजबन्द, तकिया, गोखरू, लंगर, गजरा, चूड़ी, पाटला, नोगरी, टड्डा।
- ♣ **हाथ की अंगूलियों के आभूषण** – बींटी, दामणा, अंगूठी (मूंदरी)
- ♣ **कमर के आभूषण** – कणदोरा, करधनी, कणकती, सटका, जंजीर, तगड़ी।
- ♣ **पैर के आभूषण** – तेधड़, हिरणामेन, पायल, पाजेब, तोड़ा, मकियो, आँवला, झांझर, घुंघरू/नेवरी, रमझोल, जग, अनोटपोल।
- ♣ **पैर की अंगूलियों के आभूषण** – पगपान, बिछिया, पोलरी।

❖ पुरूषों के आभूषण –

- ♣ **सिर के आभूषण** – सिरपेच
- ♣ **कान के आभूषण** – मूरकी, गोखरू, लोंग
- ♣ **गले के आभूषण** – सेन, पेंडल, बलेवड़ा, चौकी, फूल
- ♣ **पैरों के आभूषण** – कड़ा

साहित्य संस्थान

- ♣ **राजस्थान साहित्य अकादमी – उदयपुर**
  स्थापना – 1958
  पुरस्कार – मीरा पुरस्कार
  यह राजस्थान में साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला सबसे बड़ा पुरस्कार है।
  पत्रिका – मधुमति
- ♣ **राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी – जयपुर**
  स्थापना – 1969
- ♣ **सिंधी भाषा अकादमी – जयपुर**
  स्थापना – 1979
  पत्रिका – रियाण
- ♣ **उर्दू भाषा अकादमी – जयपुर**
  स्थापना – 1979
  पत्रिका – नखलिस्तान
- ♣ **संस्कृत भाषा अकादमी – जयपुर**
  स्थापना – 1980
  पुरस्कार – महाकवि माघ पुरस्कार
  पत्रिका – स्वरमंगल
- ♣ **राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी – बीकानेर**
  स्थापना – 1983
  पुरस्कार – सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार
  पत्रिका – जागती जोग
- ♣ **बृज भाषा अकादमी – जयपुर**
  स्थापना – 1986
- ♣ **मौलाना अब्दुल कलाम आजाद अरबी–फारसी शोध संस्थान – टोंक**
  स्थापना – 1978
- ♣ **राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान – जोधपुर**
  स्थापना – 1954 (जयपुर) 1958 में जोधपुर स्थानांतरित
- ♣ **रामचरण प्राच्य विद्या पीठ – जयपुर**
  स्थापना – 1960
- ♣ **राजस्थान राज्य अभिलेखागार – बीकानेर**
  स्थापना – 1955
- ♣ **सार्दुल राजस्थानी शोध संस्थान – बीकानेर**
  स्थापना – 1945
  संस्थापक – दशरथ शर्मा
- ♣ **पंजाबी भाषा अकादमी – श्री गंगानगर**
  स्थापना – 2006

प्रमुख कुप्रथाएँ

- ♣ ट्रिक – सदा कत्या सडा बाल।
- ♣ **सती प्रथा** – पति की मृत्यु होने पर पत्नी का पति के साथ जल जाना।

www.skresultpoint.com

सर्वप्रथम बूँदी रियासत ने 1822 ई. में इस प्रथा पर रोक लगायी थी।
राजा राममोहन राय के प्रयासों से गवर्नर विलियम बैंटिक ने 1829 ई. में सती प्रथा पर रोक लगायी थी।
सती प्रथा पर बीकानेर 1825, अलवर 1830, जयपुर 1844 एवं डूँगरपुर रियासत ने 1844 में रोक लगाई थी।
राज्य की अंतिम सती – रूपकंवर (दिवराला गाँव, सीकर)
राजस्थान सती प्रथा रोकथाम अधिनियम – 1987

- **दास प्रथा** – 1832 ई. में कोटा रियासत ने इस प्रथा पर रोक लगायी थी।
  राजलोक – दासों का विभाग।
- **कन्या वध** – इस प्रथा पर कोटा रियासत ने 1833 ई. में रोक लगायी थी।
  इस समय कोटा के महाराव रामसिंह द्वितीय थे।
  जयपुर रियासत ने 1844 में कन्यावध पर रोक लगाई थी।
- **त्याग प्रथा** – कन्या के विवाह के समय राजपूत परिवारों में चारण, भाट एवं संगीतजीवी जातियों को मुँह मांगी दान दक्षिणा देनी पड़ती थी।
  सर्वप्रथम मारवाड़ रियासत ने 1841 ई. में त्याग प्रथा पर रोक लगायी थी।
  त्याग प्रथा ने कन्या वध को बढ़ावा दिया था।
- **समाधि प्रथा** – सर्वप्रथम जयपुर रियासत में 1844 ई. में अंग्रेज लुडलो के प्रयासों से रोक लगी।
- **डाकण प्रथा** – इस प्रथा पर 1853 ई. में मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंह ने रोक लगायी थी।
- **बाल विवाह** – जोधपुर रियासत के प्रधानमंत्री सर प्रतापसिंह ने 1885 ई. में बाल विवाह पर रोक लगायी थी।
  अनमेल एवं बाल विवाह निषेध अधिनियम – 1903, अलवर रियासत।
  शारदा एक्ट – 1929 ई. बाल विवाह से संबंधित हरविलास शारदा (अजमेर) लाये।
  शारदा एक्ट 01 अप्रैल 1930 के दिन सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया था।

अन्य कुप्रथाएँ –

- **नाता** – अपने पति को छोड़कर किसी ओर के साथ भाग जाना।
- **नतारा** – विधना पुनर्विवाह
  सवाई जयसिंह ने सर्वप्रथम विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया था।
- **नैतरा** – विवाह का भोजन बढ़ार कहलाता है।
- **डावरिया प्रथा** – राजघरानों में राजकुमारी की शादी के समय दहेज के रूप में कुछ बालिकाएँ भेजी जाती थी।
- **छेड़ा फाड़ना** – तलाक (पति को छोड़कर किसी ओर के साथ शादी करना)
- **दांपा** – वधू मूल्य (लड़के के पिता द्वारा लड़की के पिता को शादी के बदले दी गई धनराशि)
- **बंधुआ मजदूरी/सागड़ी प्रथा** – बेगार प्रथा 1961 में
- **दहेज रोकथाम अधिनियम** – 1961 में

राजस्थानी बोलियाँ

- राजस्थानी भाषा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक "लिंग्वस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया" में किया था।
- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति का सर्वमान्य मत — गुर्जरी अपभ्रंश।
- 1650 से 1850 तक का समय राजस्थानी भाषा का स्वर्णकाल कहलाता है।
- जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को पाँच भागों में बाँटा था।
- राजस्थानी भाषा एवं साहित्य की लेखन शैलियाँ –
  1. डिंगल – पश्चिमी राजस्थान, चारण कवि।
  2. पिंगल – पूर्वी राजस्थान, भाट कवि।
- राजस्थानी भाषा 12 वीं सदी के अंत तक गुर्जरी अपभ्रंश से अलग हो गयी थी।
- 16 वीं सदी के बाद राजस्थानी स्वतंत्र भाषा के रूप में अस्तित्व में आई।
- विद्वान मोतीलाल मेनारिया, नरोत्तम लाल स्वामी, एलपी टेस्सीटोरी, हीरालाल माहेश्वरी आदि विद्वानों का संबंध राजस्थानी भाषा के अनुसंधान से है।

राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ –

मारवाड़ी बोली –

- ✓ मारवाड़ी का शुद्ध रूप जोधपुर एवं पाली के आसपास देखने को मिलता है।
- ✓ सर्वाधिक भू–भाग पर बोली जाने वाली बोली।
- ✓ राजस्थानी की मानक बोली मारवाड़ी है।
- ✓ मारवाड़ी का साहित्यिक रूप डिंगल कहलाता है।

मारवाड़ी के प्रमुख ग्रंथ –

- ✓ राजिये रा सोरठा – कवि कृपाराम
  - यह ग्रंथ पूर्वी मारवाड़ी का है।
- ✓ वेलि कृष्ण रूखमणी री – पृथ्वीराज राठौड़
  - यह ग्रंथ उत्तरी मारवाड़ी का है
  - यह ग्रंथ गागरोन दुर्ग (झालावाड़) में लिखा गया।
  - दुरसा आढ़ा ने इस ग्रंथ को पाँचवा वेद एवं 19 वाँ पुराण बताया था।
- ✓ ढ़ोला मारू रा दूहा – कवि कल्लोल।

मारवाड़ी की उपबोलियाँ –

- ✓ शेखावाटी बोली – चुरू, सीकर, झुंझुनूं के आसपास की।
- ✓ थली बोली – बीकानेर
- ✓ धाटी बोली – बाड़मेर–जैसलमेर
- ✓ गौड़वाड़ी बोली – जालौर–पाली के क्षेत्र में (गौड़वाड़ प्रदेश)
  - बीसलदेव रासौ – नरपति नाल्ह इसमें चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) की प्रेमिका राजमति का वर्णन मिलता है।
- ✓ देवड़ावाटी बोली – सिरोही की
- ✓ मेवाड़ी बोली – मेवाड़
- ✓ मेवाड़ी की उपबोली धावड़ी है।
  - बावजी चतुरसिंह ने मेवाड़ी भाषा में योग सुत्र एवं भगवद् गीता ग्रंथ लिखे थे।

वागड़ी बोली – डूँगरपुर, बाँसवाड़ा का भू–भाग

- ✓ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने वागड़ी बोली को भीली बोली कहा था।
- ✓ खेराड़ी बोली – भीलवाड़ा एवं टोंक के आसपास की बोली।

ढूँढ़ाड़ी बोली – जयपुर के आसपास का भाग।

ढूँढ़ाड़ी की उपबोलियाँ –

- ✓ राजावाटी बोली – जयपुर
- ✓ काठेड़ी बोली – जयपुर का दक्षिणी भाग
- ✓ चौरासी बोली – जयपुर एवं टोंक

www.skresultpoint.com

- ✓ नागरचोल बोली – टोंक एवं सवाई माधोपुर
- ✓ जगरौती बोली – करौली
- ✓ तोरावाटी बोली – कांतली नदी का प्रवाह क्षेत्र।

♣ **हाड़ौती बोली** – हाड़ौती क्षेत्र
- ✓ हाड़ौती का प्राचीनतम उल्लेख कैलांग महोदय ने अपने ग्रंथ 'हिंदी व्याकरण' में किया।

♣ **मेवाती बोली** – राजस्थान का पूर्वी भाग। (अलवर, भरतपुर)
- ✓ मेवाती पश्चिमी हिन्दी एवं राजस्थानी को जोड़ने का कार्य करती है।
- ✓ लालदास जी एवं चरणदास जी की रचनाएँ मेवाती बोली में हैं।

मेवाती की उपबोलियाँ –
- ✓ कठेर, भयाना, आरेज, नहेड़ा, बिछोता

♣ **अहीरवाटी बोली** – पूर्वी राजस्थान (बहरोड़ एवं मुण्डावर अलवर व जयपुर का कुछ भाग)
- ✓ यह भू–भाग राठ प्रदेश कहलाता है।
- ✓ यह बोली राठी/हीरवाटी/हीरवाल कहलाती है।
- ✓ अलीबख्शी ख्याल इसी बोली की रचना है।
- ✓ जोधराज ने अहीरवाटी में हम्मीर रासो लिखा था।

♣ **मालवी बोली** – मध्यप्रदेश के सीमावर्ती जिलों में।
- ✓ मालवी की उपबोलियाँ – रतलामी पाटवी रांगड़ी निमाड़ी सोडावाटी अमठावाड़ी
- ✓ निमाड़ी – इसे दक्षिणी राजस्थानी बोली कहा जाता है।
- ✓ मामारा – मारवाड़ी + मालवी = रांगड़ी बोली

♣ 21 फरवरी को मातृ भाषा (राजस्थानी भाषा) दिवस मनाते हैं।
♣ राजस्थानी भाषा की प्रथम फिल्म नजराणों थी।
♣ राजस्थानी भाषा की प्रथम लोकप्रिय फिल्म बाबोसा री लाडली है।

राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ

- ♣ राजस्थान सरकार द्वारा अधिसूचित जनजातियों की संख्या 12 है।
- ♣ सबसे प्राचीन जनजाति – भील
- ♣ सबसे बड़ी जनजाति – मीणा > भील > गरासिया > सहरिया।
- ♣ भारत सरकार के आदिम जनजाति समूह में शामिल राजस्थान की एकमात्र जनजाति – सहरिया।

➢ डामोर जनजाति – डूँगरपुर
- ♣ इनके गाँव का मुखिया मुखी कहलाता है।
- ♣ इनके गाँव की सबसे छोटी इकाई फला कहलाती है।
- ♣ होली के अवसर पर चाडिया कार्यक्रम आयोजित होता है।
- ♣ छेल बावसी का मेला –गुजरात
- ♣ ग्यारसी की रेवड़ी – डूँगरपुर

➢ कथौड़ी जनजाति – उदयपुर
- ♣ यह लोग मूल रूप से महाराष्ट्र के थे।
- ♣ ये लोग खैर के वृक्ष से कत्था बनाते है।
- ♣ इनके गाँव का मुखिया नायक कहलाता है।
- ♣ फड़का – मराठी अंदाज वाली साड़ी महिला व पुरूष साथ में बैठकर शराब पीते हैं।

➢ सांसी जाति – भरतपुर
- ♣ उपजातियाँ – बीजा एवं माला
- ♣ आराध्य देव – भाखर बावजी

➢ कंजर जाति – कोटा
- ♣ इनके गाँव का मुखिया पटेल कहलाता है।
- ♣ आराध्य देव – हाकम राजा

➢ सहरिया जनजाति – बाराँ
- ♣ इनके गाँव का मुखिया कोतवाल कहलाता है।
- ♣ धारी संस्कार का संबंध सहरियों से है।
- ♣ इनके विकास के लिए मामूनी संस्थान कार्यरत है।
- ♣ सहरियों द्वारा जंगल में बनायी गयी झोंपड़िया गोपना एवं केरू कहलाती है।
- ♣ इनका मृत्युभोज लोकामी कहलाता है।
- ♣ खपटा – सहरिया पुरूषों का साफा

➢ गरासिया जनजाति – सिरोही (आबू रोड़ क्षेत्र)
- ♣ गरासियों के गाँव का मुखिया सहलोत कहलाता है।
- ♣ गरासिया नक्की झील को पवित्र मानते हैं।
- ♣ विवाह के प्रकार – मोड़ बंधिया, पहरावणा विवाह, ताणना विवाह, सेवा विवाह।
- ♣ हारी भावरी – गरासियों द्वारा की जाने वाली सामूहिक कृषि।
- ♣ इनके विकास के लिए हेलरू संस्थान कार्यरत है।
- ♣ मनखारो मेलो – सिरोही
- ♣ चैत्र–विचित्र मेला – उदयपुर एवं सिरोही की सीमा पर गुजरात के निकट।

➢ भील जनजाति – बाँसवाड़ा (सर्वाधिक), डूँगरपुर, उदयपुर।
- ♣ कर्नल जेम्स टॉड ने भीलों को वनपुत्र कहा था।
- ♣ जी. एस. थॉमसन ने भीली व्याकरण लिखी थी।
- ♣ भीलों का घर कू (टापरा) कहलाता है।
- ♣ भील मुखिया पालवी कहलाता है।
- ♣ भीलों के गाँव का मुखिया गमेती कहलाता है।
- ♣ अटक – भीलों का एक गौत्र।
- ♣ भीलों का रणघोष शब्द – फाईरे–फाईरे
- ♣ खोयतु एवं ढ़ेपाड़ा (धोती) भीलों के वस्त्र है।
- ♣ वालरा कृषि – वनों को जलाकर की जाने वाली स्थानांतरित कृषि।
- ♣ चिमाता – पहाड़ी भागों में की जाने वाली कृषि।
- ♣ दजिया – मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- ♣ हाथीमना – विवाह के समय पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
- ♣ हाथीवेडो – हरे वृक्ष को साक्षी मानकर अपना जीवन साथी चुनना।
- ♣ पाखरिया – वह भील जिसने किसी सैनिक के घोड़े को मारा हो, पाखरिया कहलाता है।

www.sscresultpoint.com

- ♣ बडालिया – सगाई तय करवाने वाला व्यक्ति।
- ♣ भील समुदाय के लोग भगोरिया उत्सव के दौरान अपना जीवन साथी चुनते हैं।
- ♣ विवाह के प्रकार – हठ विवाह, सह पलायन विवाह, प्रवीक्षा विवाह, गोल गधेड़ा विवाह।
- ♣ भील महुआ के फूलों से मदिरा बनाते हैं।

➢ मीणा जनजाति – उदयपुर, जयपुर।

- ♣ मूल स्थान – अजमेर से आगरा तक फैली हुई कालीखोह पर्वतमाला।
- ♣ मीणा 24 खाप पंचायतों में विभाजित है।
- ♣ मत्स्य पुराण में इनका उल्लेख मिलता है।
- ♣ गाँव का मुखिया – पटेल।
- ♣ मोरनी मांडना मीणाओ से संबंधित है।
- ♣ बलेवड़ा – पुरूषों के गले का आभूषण।
- ♣ मीणा जाति के लोग भूरिया बाबा को अपना आराध्य मानते हैं।

➢ माणिक्यलाल वर्मा जनजाति शोध संस्थान – उदयपुर

- ♣ स्थापना – 1964

संत सम्प्रदाय

भक्तिधारा

सगुण	निर्गुण
शैव सम्प्रदाय	रामस्नेही सम्प्रदाय
वैष्ण सम्प्रदाय	विश्नोई सम्प्रदाय
दासी सम्प्रदाय	जसनाथी सम्प्रदाय
भक्त कवि दुर्लभ	लालदासी सम्प्रदाय
	दादूपंथी सम्प्रदाय
	संत धन्नाजी
	संत पीपाजी

❖ सगुण भक्ति धारा –

➢ पाशुपत सम्प्रदाय –

- ✓ संस्थापक – लकुलीश मुनि।
- ✓ प्रधान पीठ – एकलिंगजी मंदिर, कैलाशपुरी (उदयपुर)।
- ✓ इस मंदिर का निर्माण बप्पा रावल ने अपने गुरू हारित ऋषि के लिए करवाया था।
- ✓ हारित ऋषि इस संप्रदाय से संबंधित थे।

➢ नाथ सम्प्रदाय – संस्थापाक – नाथ मुनि।

- ✓ नाथ संप्रदाय का प्राचीन केन्द्र – सिरे मंदिर (जालौर)।
- ✓ यहाँ पर जालंधर नाथ ने तपस्या की थी।
- ✓ नाथ सम्प्रदाय के गुरू गोरखनाथ ने हठ योग चलाया था।
- ✓ प्रमुख केन्द्र – महामंदिर (जोधपुर)।
  इस मंदिर का निर्माण जोधपुर के राजा मानसिंह ने अपने गुरू आयस देव नाथ के लिए करवाया था।
- ✓ **नाथ संप्रदाय की शाखाएं –**
  - ○ माननाथी – महामंदिर (जोधपुर)
  - ○ बैरागपंथी – राता डूँगर, पुष्कर के निकट।

➢ वैष्णव सम्प्रदाय –

मत	प्रतिपादक (शमानिराव)
✓ अद्वैतवाद	शंकराचार्य जी
✓ द्वैतवाद	माध्वाचार्य जी
✓ द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य जी
✓ विशिष्टद्वैतवाद	रामानुजाचार्य जी
✓ शुद्धाद्वैतवाद	वल्लभाचार्य जी

➢ रामानुज सम्प्रदाय –

- ✓ राजस्थान में प्रमुख केन्द्र – गलता (जयपुर)।
- ✓ संस्थापक – कृष्णदास पयहारी।
- ✓ इन्होंने आमेर के राजा पृथ्वीराज कच्छवाह के गुरू चतुरनाथ को शास्त्रार्थ में पराजित करके रामानुज सम्प्रदाय की शाखा स्थापित की थी।
- ✓ गलता (जयपुर) को मंकी वैली एवं उत्तर तोताद्रि के नाम से जाना जाता है।
- ✓ कृष्णदाय पयहारी ने 'जुगलमैन चरित्र' ग्रन्थ लिखा था।
- ✓ कृष्णदाय पयहारी के शिष्य अग्रदास जी ने रेवासा धाम (सीकर) में इस सम्प्रदाय की एक शाखा स्थापित की थी जिसे 'रसिक सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है।

➢ वल्लभ सम्प्रदाय –

- ✓ इस सम्प्रदाय के मंदिर 'हवेली' कहलाते हैं।
- ✓ भक्ति – पुष्टि
- ✓ दर्शन – झांकी
- ✓ संगीत – हवेली संगीत
- ✓ प्रधान पीठ – नाथद्वारा (राजसमंद)
- ✓ मंदिर मेवाड़ महाराणा राजसिंह प्रथम ने सिंहाड़ गाँव (नाथद्वारा) में बनवाया था।

❖ वल्लभ संप्रदाय के प्रमुख मंदिर –

- ✓ विट्ठलनाथ जी – नाथद्वारा (राजसमंद)
- ✓ द्वारिकाधीश मंदिर – कांकरोली (राजसमंद)
- ✓ मथुरेश मंदिर – कोटा
- ✓ मदन मोहन जी मंदिर – कामां (डीग)
- ✓ गोकुल चन्द्र जी मंदिर – कामां (डीग)
- ✓ गोकुलनाथ जी – गोकुला (यूपी)
- ✓ बालकृष्ण जी – सूरत (गुजरात)

➢ निम्बार्क सम्प्रदाय –

- ✓ अन्य नाम – हंस सम्प्रदाय, सनकादि सम्प्रदाय
- ✓ राजस्थान में प्रमुख पीठ – सलेमाबाद (अजमेर)
- ✓ संस्थापक – आचार्य परशुराम जी (ठिकरिया गाँव, सीकर)
- ✓ यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (राधा अष्टमी) के दिन मेला भरता है।

➢ माध्व गौड़ीय सम्प्रदाय –

- ✓ संस्थापक – माध्वाचार्य जी
- ✓ मत – द्वैतवाद/अचिंत्य भेदवाद।
- ✓ इस सम्प्रदाय की विचारधाराओं का प्रचार गौड़ मुनि ने किया था।
- ✓ चैतन्य महाप्रभु ने इस सम्प्रदाय को नया रूप दिया था।
- ✓ **राजस्थान में प्रमुख पीठ –** गोविन्द देवजी मंदिर (जयपुर)।
  इस मंदिर का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।
- ✓ अन्य मंदिर – मदन मोहन जी मंदिर – करौली।

❖ निर्गुण भक्ति धारा –

➢ रामस्नेही सम्प्रदाय –

- ♣ प्रधान पीठ – शाहपुरा।

www.sikresultpoint.com

- ✓ संस्थापक – संत रामचरण जी (जन्म स्थान – सोडा गाँव, टोंक)
- ✓ ग्रन्थ – अणभैवाणी
- ✓ गुरू का नाम – कृपाराम जी
- ✓ प्रमुख मेला – फूलडोल मेला – चैत्र महीना।

♣ रैण (नागौर) –
- ✓ संस्थापक – संत दरियाव जी
- ✓ गुरू – बालकनाथ जी/प्रेमनाथ जी
- ✓ संत दरियाव जी धुनिया जाति के मुस्लिम थे।
- ✓ रैण शाखा सबसे प्राचीन शाखा है।

♣ सिंहथल (बीकानेर) –
- ✓ संस्थापक – हरिरामदास जी
- ✓ गुरू – जैमलदास जी
- ✓ ग्रन्थ – निसाणी

♣ खेड़ापा (जोधपुर) –
- ✓ संस्थापक – रामदास जी
- ✓ गुरू – हरिरामदास जी।

➢ गुदड़ सम्प्रदाय – दांतड़ा (भीलवाड़ा)
- ✓ संस्थापक – संतदास जी

➢ लालदासी संप्रदाय –
- ✓ मध्यकालीन मेवाती संत (मुस्लिम)
- ✓ **ट्रिक** – लाल धोले नग शेर होते हैं।
- ✓ जन्म स्थान – धौलीदूव (अलवर)
- ✓ देहांत – नगला जहाज (भरतपुर)
- ✓ समाधि – शेरपुर (अलवर)।
- ✓ प्रधान पीठ – नगला जहाज (भरतपुर)
- ✓ गुरू का नाम – गदन चिश्ती।
- ✓ लालदासजी मेव जाति के लकड़हारे थे।
- ✓ लालदास जी ने मुगल बादशाह शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह के पूछने पर भविष्यवाणी की थी कि दिल्ली का सम्राट वही बनेगा जो अपने भाइयों की हत्या करेगा।

➢ चरणदासी सम्प्रदाय –
- ✓ जन्म स्थान – डेहरा गाँव (अलवर)
- ✓ प्रधान पीठ – दिल्ली
- ✓ चरणदासजी ने नादिरशाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।
- ✓ इस सम्प्रदाय में 42 नियमों की पालना होती है।
- ✓ चरणदासजी के ग्रंथ – धर्मजहाज, अष्टांग योग, नासकेत लीला
- ✓ शिष्याएँ –
  - दयाबाई – ग्रंथ – विनयमलिका
  - सहजोबाई।

➢ दादूपंथी सम्प्रदाय –
- ✓ संत दादूदयाल जी।
- ✓ जन्म – 1544 ई. में अहमदाबाद (गुजरात)
- ✓ लोदीराम नामक ब्राह्मण ने इनको साबरमती नदी से बचाया था।
- ✓ गुरू का नाम – वृंदावन जी।
- ✓ इन्होंने 1574 ई. में सांभर (जयपुर) में निपख (ब्रह्म) संप्रदाय की स्थापना की थी।
- ✓ दादूदयाल के बाद उत्तराधिकारी गरीबदास बने जो इनके पुत्र थे।
- ✓ अभिवादन वाक्य – सत्य राम।
- ✓ इन्हें राजस्थान का कबीर कहा जाता है।

www.skresultpoint.com

- ✓ इन्होंने फतेहपुर सीकरी (आगरा) में अकबर से मुलाकात की थी।
- ✓ इनके 152 शिष्य थे जिसमें से 52 प्रमुख थे। इन्हें '52 स्तंभ' कहा जाता है।

दादूदयाल के ग्रन्थ –

दादूदयाल रा दूहा	दादूदयाल री वाणी
कायाबेली	परिचय अंग
संतगुण सागर	नाममाला

- ✓ मृत्यु – 1603 भैराणा पहाड़ी, नारायण (जयपुर) स्थित दादूखोल (दादूपालकी) गुफा में हुई।
- ✓ प्रधान पीठ – नारायणा (जयपुर)
- ✓ अलख दरीबा – सत्संग स्थल।

दादूपंथ की शाखाएँ – 05

1. विरक्त
2. खालसा – गरीबदास
3. नागा – सुन्दरदास (ग्रन्थ – ज्ञान समुद्र)
4. उतरादे
5. खाकी

- ✓ जयपुर के राजा सवाईसिंह ने नागा साधुओं को अपनी सेना में शामिल किया था।

दादूदयाल के प्रमुख शिष्य
- ✓ बालिंद जी – इनके गुरू दादूदयाल थे।
- ✓ सुन्दरदास जी – इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की थी।
- ✓ रज्जब जी – आजीवन दूल्हे के वेश में रहे। ग्रन्थ – हरड़ेवाणी, सर्वंगी।
- ✓ बखना जी
- ✓ माधोदास
- ✓ जगन्नाथ।

➢ विश्नोई सम्प्रदाय –
- ✓ संस्थापक – जाम्भोजी जन्म – पीपासर (नागौर) 1451 ई.।
- ✓ पिता – लोहट जी
- ✓ माता – हंसाबाई
- ✓ गुरू – गोरखनाथ जी
- ✓ जाम्भोजी को विष्णु का अवतार माना जाता है।
- ✓ जाम्भोजी ने समराथल धोरा (बीकानेर) में 1485 में विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
- ✓ सम्प्रदाय के 29 नियम है।
- ✓ जाम्भोजी ने बीकानेर में लालासर गाँव में सांसारिक देह का त्याग किया था।
- ✓ समाधि – मुकाम तालवा, नोखा (बीकानेर) यह प्रधान पीठ है।
- ✓ सांथरी – जाम्भोजी के उपदेश स्थल।
- ✓ प्रमुख ग्रन्थ – जम्भ सागर, जम्भ संहिता, विश्नोई धर्म प्रकाश।

➢ जसनाथी संप्रदाय –
- ✓ संस्थापक – जसनाथ जी।
- ✓ जन्म – 1482 ई., डाबला तालाब, कतरियासर (बीकानेर)
- ✓ पिता – हम्मीर जी
- ✓ माता – रूपा देवी
- ✓ जसनाथ जी एवं जाम्भोजी के मानस गुरू गोरखनाथ जी थे।
- ✓ जसनाथ जी ने 12 वर्षों तक गोरखमालिया (बीकानेर) नामक स्थान पर तपस्या की थी।
- ✓ समाधि – 1506 ई. कतरियासर (बीकानेर) – प्रधान पीठ।
- ✓ शाखाएं –
  लिखमादेसर, मालासर, पुनरासर, बामलू – बीकानेर
  पांचला सिद्धा – नागौर
- ✓ सम्प्रदाय के 36 नियम है।

✓ प्रमुख ग्रंथ – सिंभूदड़ा एवं कोड़ा।
✓ प्रमुख शिष्य – रूस्तमजी, लालनाथ, चौखनाथ, सवाई नाथ।

➢ **संत धन्ना –**
✓ जन्म धुवन गाँव (टोंक) 1415 ई. में।
✓ गुरू – रामानंद जी।
✓ संत धन्ना भक्ति के लिए वृंदावन चले गये थे।
✓ इन्होंने सर्वप्रथम यहाँ भक्ति की अलख जगाने का कार्य किया था।

➢ **संत पीपा जी –**
✓ गागरोन (झालावाड़)
✓ गुरू – रामानंद जी।
✓ इनका मूल नाम प्रतापराव खिंची था।
✓ इन्हें दर्जी समुदाय का आराध्य देव माना जाता है।
✓ इनकी समाधि (गुफा) टोडारायसिंह (टोंक) में बनी हुई है।
✓ संत पीपा जी ने 'चिंतामणि जोग' ग्रन्थ लिखा था।
✓ संत पीपा जी का एक मंदिर समदड़ी (बालोतरा) में भी है।
✓ पीपा के अनुसार मोक्ष का साधन 'भक्ति' है।

➢ **निष्कलंकी सम्प्रदाय –**
✓ प्रधान पीठ – साबला गाँव (डूँगरपुर)
✓ संस्थापक – संत मावजी (विष्णु का कल्की अवतार)
✓ मावजी ने लसोड़िया आंदोलन चलाया था।
✓ ग्रंथ – चौपड़ा – 05 भागों में वाद विवाद शैली लिखित।
इस ग्रंथ में 72 लाख 96 हजार छंद है।
इस ग्रंथ को दीपावली के दिन मंदिरों में दर्शन के लिए रखा जाता है।

➢ **निरंजनी सम्प्रदाय –**
✓ संस्थापक – संत हरिदास (मूल नाम – हरीसिंह सांखला)
✓ जन्म कापड़ोद गाँव, नागौर।
✓ समाधि/प्रधान पीठ – गाढ़ा गाँव, नागौर।
✓ इन्हें कलयुग का वाल्मीकि कहा जाता है।
✓ यह सप्रंदाय सगुण एवं निर्गुण भक्ति धारा का मिला–जुला रूप है।
✓ ग्रन्थ – मंत्र राज प्रकाश।

➢ **परनामी सम्प्रदाय –**
✓ संस्थापक – प्राणनाथ जी (गुजरात)
✓ प्रधान पीठ – पन्ना (मध्यप्रदेश) इस सम्प्रदाय के भक्त लोग जयपुर में अधिक रहते है।
✓ ग्रन्थ – कुजलम स्वरूप।

➢ **अलखिया सम्प्रदाय –**
✓ संस्थापक – लालगिरी जी।
✓ प्रधान पीठ – बीकानेर।

➢ **राजाराम सम्प्रदाय एवं नवल सम्प्रदाय –**
✓ प्रधानपीठ – जोधपुर।

➢ **ऊँदरिया सम्प्रदाय एवं कांचलिया सम्प्रदाय –**
✓ मेवाड़ (भील समुदाय)

➢ **भक्त कवि दुर्लभ** – वागड़ प्रदेश
✓ इन्हें राजस्थान का नृसिंह कहा जाता है।

❖ **जैन संत –**

● **तेरापंथ –**

➢ **संस्थापक आचार्य भिक्षु (भीखण जी)**
✓ कंटलिया गाँव (पाली)
✓ इन्होंने कैलवा (उदयपुर) में तेरापंथ की स्थापना की थी।

➢ **आचार्य तुलसी –**
✓ तेरापंथ के 9वें आचार्य।
✓ इन्होंने 1949 ई. में सरदारशहर (चुरू) से अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की थी।
✓ आचार्य तुलसी की प्रेरणा से लाडनूं (नागौर) में जैन विश्व भारती की स्थापना की गई।

➢ **आचार्य महाप्रज्ञ –**
✓ तेरापंथ के 10वें आचार्य।
✓ जन्म टमकोर गाँव (झुंझुनूं)।
✓ इस गाँव को साधु संतों की खान कहा जाता है।
✓ इन्होंने प्रेक्षाध्यान का सिद्धांत दिया था।

❖ **महिला संत –**

➢ **मीराँ बाई –**
✓ जन्म 1498 ई. (कुड़की गाँव, मेड़ता ठिकाना)
✓ कुड़की वर्तमान में ब्यावर जिले में है।
✓ दादा – दूदा
✓ पिता –रतनसिंह
✓ माता – वीर कुंवरी
✓ बचपन का नाम – पेमल
✓ गुरू – रैदास
रैदास की छतरी – चित्तौड़गढ़
✓ मीराबाई का विवाह मेवाड़ महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ था।
✓ मीराँ बाई को राजस्थान की राधा कहा जाता है।
✓ मीराँ बाई ने अपना अंतिम समय द्वारिका (डाकोर) स्थित रणछोड़राय जी मंदिर में बिताया था।
✓ मीराँ बाई पर 1952 में डाक टिकट जारी किया गया था।
✓ प्रमुख ग्रन्थ –
○ मीराँ बाई के निर्देशन में रतना खाती ने 'नरसी जी रो मायरो' ग्रन्थ लिखा था।
○ मीराँबाई की पदावलियाँ,
○ रूखमणी मंगल,
○ सत्यभामा जी ने रूसणो।
✓ चारभुजा मीराँबाई का मंदिर मेड़ता (नागौर) में है।

➢ **गवरी बाई** – वागड़ प्रदेश।
✓ इन्हें वागड़ की मीराँ बाई कहा जाता है।
✓ इन्होंने 'शुक्र सम्प्रदाय' की स्थापना की थी।
✓ डुँगरपुर के महारावल शिवसिंह ने गवरी बाई के लिए बालमुकुंद मंदिर बनवाया था।

➢ **भूरी बाई 'अलख'** – मेवाड़

➢ **संत राना बाई** – हरनावा गाँव, नागौर।
✓ इन्हें राजस्थान की दूसरी मीराँ बाई कहा जाता है।

➢ **संत करमा बाई** – नागौर।

लोकदेवता

➢ **पंचपीर** – गोपा मेहरा
पाबू, हड़बू, रामदेव, मांगलिया मेहा।
पांचो पीर पधारजो गोगाजी जेहा।

www.skresultpoint.com

➢ **गोगाजी चौहान –**

- ✓ जन्म – ददरेवा (चुरू) में नागवंशीय चौहान परिवार में 946 ई. को हुआ।
- ✓ पिता – जेहवर जी
- ✓ माता – बाछल दे।
- ✓ गुरू – गोरखनाथ जी
- ✓ वाहन – नीली घोड़ी।
- ✓ विवाह – केलम दे (बुढ़ोजी राठौड़ की पुत्री)
- ✓ गोगाजी ने महमूद गजनवी से युद्ध लड़ा था।
- ✓ गजनवी ने गोगाजी को 'जाहरपीर' की उपाधि दी थी।
- ✓ युद्ध के दौरान गोगाजी का सिर ददरेवा (चुरू) में गिरा था।
- ✓ इस स्थल को शीर्षमेड़ी (ददरेवा, चुरू) कहा जाता है।
- ✓ धड़मेड़ी/धुरमेड़ी/गोगामेड़ी – नौहर (हनुमानढ़) यहाँ पर युद्ध के दौरान गोगाजी का धड़ गिरा था।
- ✓ कायमखानी मुस्लिम (फतेहपुर, सीकर) गोगाजी को पीर के रूप में पूजते हैं।
- ✓ **मुख्य मंदिर –**
  गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) – इस मंदिर का निर्माण मकबरेनुमा आकृति में फिरोज तुगलक ने करवाया था।
- ✓ यहाँ पर भाद्रपद कृष्ण नवमी के दिन गोगाजी का मेला भरता है। मंदिर का पूजारी चायल कहलाता है।
- ✓ गोगाजी की ओल्ड़ी – सांचोर।
- ✓ गोगा राखड़ी – हल जोतते समय 09 गाँठ वाली राखी बाँधी जाती है।
- ✓ गोगाजी के भक्तों द्वारा डेरू वाद्ययंत्र बजाया जाता है।
- ✓ भक्तों द्वारा गोगाजी की याद में गाये जाने वाले गीत 'पीर की सोल' कहलाते हैं।
- ✓ गोगाजी की ख्याल की रचना लच्छीराम ने की थी।
- ✓ गोगाजी का रसावला – मेहाजी बीठू।

➢ **पाबूजी राठौड़ –**

- ✓ जन्म 1239 ई. को कोलूमण्ड (फलौदी) में।
- ✓ पिता – धांधल जी
- ✓ माता – कमला दे
- ✓ पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।

उपनाम –

- ○ गौरक्षक देवता
- ○ ऊँटों के देवता
- ○ प्लेग रक्षक देवता

- ✓ विवाह – सुप्यार दे (अमरकोट के सूरजमल सोढ़ा की पुत्री)
- ✓ घोड़ी/वाहन – केसर कालमी (यह देवल चारणी की घोड़ी थी।)
- ✓ पाबूजी राठौड़ ने अपने बहनोई जिंदराव खींची से गायों की रक्षा के लिए युद्ध लड़ा था।
- ✓ पाबूजी देवल चारणी की गायों की रक्षा करते हुए देचू (जोधपुर) में वीरगति को प्राप्त हुए।
- ✓ मारवाड़ में सर्वप्रथम सांडे/ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को है।
- ✓ पाबूजी ने थोरी (नायक) जाति के सात भाइयों को शरण दी थी।
- ✓ मेहर जाति के मुस्लिम पाबूजी को पीर के रूप में पूजते है। पाबूजी के भक्तों द्वारा थाली नृत्य किया जाता है।
- ✓ पाबूजी के भक्तों द्वारा गायी जाने वाली लोकगाथा पवाड़े कहलाती है।
- ✓ पवाड़े गाते समय 'माठ' नामक वाद्ययंत्र बजाया जाता है।
- ✓ पाबूजी के गीत – बांकीदास।
- ✓ पाबूजी की फड़ का वाचन रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है।
- ✓ पाबूजी धणी की वाचना गाते समय सारंगी बजायी जाती है।
- ✓ मुख्य मंदिर – कोलूमण्ड (फलौदी) चैत्र अमावस्या के दिन मेला भरता है।
- ✓ पाबू प्रकाश आशिया मोडजी ने लिखा था।

➢ **मेहाजी मांगलिया –**

- ✓ 15वीं सदी।
- ✓ जन्म – तापू ठिकाना (मारवाड़)
- ✓ वाहन – किरड़ काबरा घोड़ा
- ✓ मुख्य मंदिर – बापणी गाँव (फलौदी)
- ✓ मेहाजी जैसलमेर के राणगदेव भाटी से युद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं।

➢ **हड़बूजी सांखला –**

- ✓ जन्म – भूंडेल गाँव (नागौर)
- ✓ हड़बूजी एवं रामदेवजी मौसेरे भाई थे।
- ✓ हड़बूजी ने संकटकाल में राव जोधा की सहायता की थी।
- ✓ राव जोधा ने हड़बूजी को बेंगटी गाँव (फलौदी) दिया था।
- ✓ मुख्य मंदिर – बेंगटी गाँव (फलौदी)।
- ✓ इस मंदिर में बैलगाड़ी की पूजा होती है।
- ✓ हड़बूजी राव जोधा द्वारा भेंट की गई बैलगाड़ी से गायों के लिए चारा लाया करते थे।
- ✓ हड़बूजी को शगुन शास्त्र का ज्ञाता माना जाता है।

➢ **रामदेवजी –**

- ✓ जन्म – 1405 ई. को उण्डू काश्मीर (बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (बाबे री बीज) के दिन हुआ था।
- ✓ पिता – अजमाल जी तंवर
- ✓ माता – मैणादे।
- ✓ विवाह – नैतल दे (अमरकोट के दलजी सोढ़ा की पुत्री)।
- ✓ गुरू – बालीनाथ जी
- ✓ वाहन – लीला घोड़ा
- ✓ बाबा रामदेवजी ने भैरव राक्षस का वध किया था।
- ✓ उपनाम –
  - ○ अर्जुन का वंशज,
  - ○ कृष्ण का अवतार,
  - ○ साम्प्रदायिक सद्भाव के देवता,
  - ○ कुष्ठ रोग निवारक देवता।
- ✓ रामदेवजी ने कामड़िया पंथ की स्थापना की थी।
- ✓ रामदेवजी ने 24 वाणियाँ ग्रंथ लिखा था।
- ✓ रामदेवजी ने जम्मा–जागरण अभियान चलाया था।
- ✓ मुख्य मंदिर/जीवित समाधि (1458 ई.) – रामसरोवर की पाल, रूणेचा भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन समाधि ली थी।
- ✓ यहाँ भरने वाला मेला पश्चिमी राजस्थान में साम्प्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला है।
- ✓ अन्य मंदिर –
  - ○ मसूरिया पहाड़ी – जोधपुर
  - ○ सुरताखेड़ा – चित्तौड़गढ़
  - ○ बिराठिया खुर्द – ब्यावर
  - ○ छोटा रामदेवरा – गुजरात
- ✓ रामदेवजी के सहयोगी – रतना राईका, हरजी भाटी, लखी बणजारा

➢ **देवनारायण जी बगड़ावत –**

- ✓ जन्म 1243 ई. मालासेरी के जंगल, आसींद (भीलवाड़ा)
- ✓ बचपन का नाम – उदयसिंह

www.gkresultpoint.com

- ✓ माता–पिता – सेढू खटानी व सवाई भोज
- ✓ पत्नी – पीपल दे
- ✓ वाहन – लीलागर घोड़ा
- ✓ गुर्जर समुदाय के आराध्य देव हैं।
- ✓ इनके मंदिर में बड़ी ईंटों एवं नीम के पत्तों की पूजा होती है।
- ✓ मुख्य मंदिर – आसींद (भीलवाड़ा) – यहाँ सवाई भोज का मंदिर बना हुआ है।
- ✓ देव माली (ब्यावर) – देवनारायणजी का समाधि स्थल।
- ✓ देव डूँगरी – चित्तौड़गढ़
- ✓ देवधाम – जोधपुरिया (टोंक)
- ✓ वर्ष 2011 में देवनारायणजी एवं तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया।

➢ **वीर तेजाजी धोल्या –**
- ✓ जन्म – खरनाल (नागौर) में धोल्या जाट परिवार में 1074ई.
- ✓ पिता – ताहड़ जी
- ✓ माता – रामकुंवरी
- ✓ विवाह – पेमल (पनेर – अजमेर)
- ✓ वाहन – लीलण
- ✓ उपनाम –
  - ○ गौ–रक्षक देवता – लाछा गुजरी की गायों की रक्षा की थी।
  - ○ नागों के देवता
  - ○ कृषि–कार्यों के उपासक देवता
  - ○ काला–बाला (नारू) के देवता
- ✓ तेजाजी गायों की रक्षा करते हुए अजमेर के सुरसुरा नामक स्थान पर वीरगति को प्राप्त होते हैं।
- ✓ पत्नी पेमल सती हो जाती है।
- ✓ तेजाजी का मुख्य मंदिर खरनाल (नागौर) में है।
- ✓ तेजादशमी का मेला परबतसर (नागौर) में भरता है।
- ✓ तेजाजी के मंदिर के पूजारी घोड़ला कहलाते हैं।
- ✓ अन्य मंदिर – बांसी दूगारी – बूँदी।

➢ **वीर कल्ला जी राठौड़ –**
- ✓ जन्म सामियाना (मेड़ता, नागौर)
- ✓ मीराँ बाई इनकी बुआ थी।
- ✓ इनके चाचा जयमल मेड़तिया थे।

उपनाम –
  - ○ भाथी खत्री (गुजरात में)
  - ○ चार हाथों वाले देवता – चित्तौड़ के तीसरे साके के समय अपने चाचा घायल जयमल मेड़तिया को अपने कंधों पर बैठाकर युद्ध लड़ा था इसलिए इन्हें चार हाथों वाला देवता कहा जाता है।
  - ○ शेषनाग का अवतार
- ✓ चित्तौड़ के तीसरे साके के समय युद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं। चित्तौड़गढ़ दुर्ग के भैरव पोल के पास इनकी छतरी बनी हुई है।
- ✓ वागड़ प्रदेश में इनकी अधिक मान्यता है।
- ✓ वीर कल्ला जी की जागीर रूण्डेला (रनेला) सलूम्बर में है।

➢ **मामादेव** – साल्योदड़ा गाँव (सीकर)
- ✓ वर्षा के देवता।
- ✓ इन्हें भैंसे की बलि दी जाती है।
- ✓ मामाजी की मूर्ति गाँव के बाहर तोरणद्वार के रूप में होती है।
- ✓ मामाजी के मिट्टी के घोड़े हरजी गाँव (जालौर) के प्रसिद्ध है।

➢ **देव बाबा** – नगला जहाज (भरतपुर)
- ✓ वाहन – भैंसा
- ✓ इन्हें 'ग्वालों के देवता' कहा जाता है।

➢ **हरिराम बाबा** – झोरड़ा गाँव (नागौर)
- ✓ इनके मंदिर में साँप की बांबी (बिल) की पूजा होती है।

➢ **आलमजी** – आलमनगरी – धोरीमन्ना (बाड़मेर)
- ✓ मूल नाम – जैतमलोत राठौड़।

➢ **झरड़ा जी** – कोलूमण्ड (जोधपुर)
- ✓ बूढ़ोजी राठौड़ के पुत्र
- ✓ अन्य नाम – रूपनाथ
- ✓ इनकी पूजा हिमाचल प्रदेश में बालकनाथ के नाम से होती है।
- ✓ झरड़ा जी री पाल – छोटू (बाड़मेर)।

➢ **वीर विग्गा जी** – रिड़ी–बिग्गा (बीकानेर)
- ✓ विग्गा जी जाखड़ समुदाय के कुल देवता है।
- ✓ वाहन – कमेत घोड़ी

➢ **भूरिया बाबा** – सिरोही
- ✓ मीणा जनजाति के आराध्य देवता
- ✓ अरणौद (प्रतापगढ़) में इनकी पूजा गौतमेश्वर के नाम से की जाती है।

➢ **वीर पनराज जी** – नगा गाँव (जैसलमेर)
- ✓ गायों की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

➢ **वीर तल्लीनाथ जी –**
- ✓ मूल नाम – गांगदेव राठौड़।
- ✓ मुख्य मंदिर – पंचमुखी पहाड़ी, पांचौटा गाँव (जालौर)
- ✓ इनकी पूजा ओरण के रक्षक देवता के रूप में भी की जाती है।

➢ **राव मल्लीनाथजी –**
- ✓ मंदिर – तिलवाड़ा (बालोतरा)
- ✓ पत्नी – रानी रूपादे
- ✓ मल्लीनाथजी ने कुण्डा सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
- ✓ पत्नी से प्रभावित होकर गुरू दीक्षा ली थी।

➢ **ईलोजी – मारवाड़ के देवता।**

➢ **भोमिया जी – भूमि रक्षक देवता**

➢ **वीर फत्ता जी –**
- ✓ सांथू गाँव (जालौर)
- ✓ यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल नवमी के दिन मेला भरता है।
- ✓ क्षेत्रपाल – ग्राम देवता के रूप में पूजनीय।

लोकदेवियाँ

➢ **कैलादेवी** – करौली
- ✓ यह मंदिर कालीसिल नदी के किनारे है।
- ✓ मेला – चैत्र शुक्ल अष्टमी
- ✓ मेले के दौरान भक्तों द्वारा गाये जाने वाले गीत लांगुरिया (घुटकन) कहलाते हैं।

➢ **स्वांगिया माता** – जैसलमेर
- ✓ भाटियों की कुलदेवी
- ✓ स्वांग – मुड़ा हुआ भाला।
- ✓ स्वांगिया माता को सुगनचिड़ी का रूप माना जाता है।

www.skresultpoint.com

➢ **तनोट माता** – जैसलमेर।
- ✓ रूमाली माता के रूप में प्रसिद्ध।
- ✓ तनोट माता को थार की वैष्णो देवी कहा जाता है।
- ✓ यहाँ पूजा बीएसएफ के जवान करते हैं।
- ✓ भारत–पाक युद्ध (1965) का विजयस्तंभ बना हुआ है।

➢ **जिलाणी माता** – बहरोड़ (अलवर)
- ✓ जिलाणी माता ने धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों को रोका था।

➢ **मरकण्डी माता** – निमाज (पाली)
➢ **जलदेवी** – संसेरा गाँव (राजसमंद)
➢ **समाई माता** – बाँसवाड़ा

➢ **ब्राह्मणी माता** – सोरसन (बाराँ)
- ✓ मंदिर में देवी की पीठ की पूजा की जाती है।
- ✓ यहाँ गधों का मेला भी भरता है।

➢ **नारायणी माता** –बैरवा डूंगरी (राजगढ़, अलवर)।
- ✓ 11 वीं सदी में निर्मित गुर्जर–प्रतिहार कालीन मंदिर।
- ✓ नाइयों (सैन) की कुलदेवी है।

➢ **आवरी माता** – चित्तौड़गढ़

➢ **आशापुरी माता** – मोदरा गाँव (जालौर)
- ✓ जालौर के चौहानों की कुलदेवी।

➢ **जमुवाय माता** – जमुवायरामगढ़ (जयपुर)
- ✓ इस मंदिर का निर्माण कच्छवाह राजवंश के संस्थापक दूल्हेराय ने करवाया था। जमुवाय माता कच्छवाहों की कुलदेवी है।

➢ **शिला माता** – आमेर (जयपुर)
- ✓ शिला माता की प्रतिमा को आमेर के राजा मानसिंह पूर्वी बंगाल के राजा कैदार को हराकर लेकर आए थे।
- ✓ कच्छवाहों की ईष्ट देवी।
- ✓ यहाँ पर भक्तों को इच्छानुसार शराब का प्रसाद दिया जाता है।

➢ **जीण माता** – रेवासा धाम, सीकर।
- ✓ चौहानों की देवी।
- ✓ मधुमक्खियों की देवी।
- ✓ औरंगजेब ने कई वर्षों तक दीपक की ज्योत के लिए घी भेजा था।
- ✓ राजस्थानी संस्कृति में सबसे लंबा गीत जीण माता का है।

➢ **करणी माता** – देशनोक (बीकानेर)
- ✓ जन्म – सुआप गाँव (जोधपुर) के चारण परिवार में।
- ✓ बचपन का नमा – रिद्धि बाई।
- ✓ चारणों की कुल देवी।
- ✓ मुख्य मंदिर – देशनोक, बीकानेर।
- ✓ चूहों वाली देवी।
- ✓ सफेद चूहे काबा कहलाते हैं।
- ✓ करणी माता का मंदिर मठ कहलाता है।
- ✓ यहाँ दो बड़ी कड़ाईयाँ है, जिन्हें सावण–भादो के नाम से जाना जाता है।

➢ **राणी सती** – झुंझुनूं
- ✓ मूल नाम – नारायणी बाई अग्रवाल।
- ✓ दादी जी के नाम से प्रसिद्ध।
- ✓ यहाँ भाद्रपद अमावस्या के दिन मेला भरता है।

➢ **शाकम्भरी माता** – सांभर, जयपुर।
- ✓ चौहानों की कुलदेवी।

➢ **नागणेची माता** – जोधपुर (मेहरानगढ़)।
- ✓ नागणेची माता राठौड़ों की कुलदेवी है।
- ✓ राठौड़ शासक धुहड़ ने नागणेची माता की प्रतिमा कर्नाटक से लाकर बालोतरा के नागाणा गाँव में स्थापित की थी।
- ✓ यह 18 भुजाओं वाली लकड़ी की प्रतिमा थी।
- ✓ मंदिर –
  - ○ नागाणा (बाड़मेर)
  - ○ मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)
  - ○ जूनागढ़ (बीकानेर)
- ✓ मारवाड़ के राठौड़ों की आराध्य देवी – चामुण्डा माता (मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर)

➢ **घेवर माता** – राजसमंद झील (कांकरोली, राजसमंद)
- ✓ घेवर माता ने राजसमंद झील की नींव रखी थी।
- ✓ एकमात्र देवी जो बिना पति के सती हुई थी।

➢ **सुगाली माता** – आऊवा, पाली।
- ✓ आऊवा के चम्पावत ठाकुरों की कुलदेवी।
- ✓ 1857 क्रांति की देवी।

➢ **छींक माता** – जयपुर।
➢ **छींछ माता** – बाँसवाड़ा।

➢ **शीतला माता** – शील की डुँगरी, चाकसू, जयपुर।
- ✓ मंदिर का निर्माण सवाई माधोसिंह ने करवाया था।
- ✓ उपनाम –
  - ○ सेंढ़ल माता,
  - ○ महामाई माता,
  - ○ शिशु रक्षक देवी (मातृरक्षिका),
  - ○ चेचक निवारक देवी
- ✓ मेला – चैत्र कृष्ण सप्तमी।
  यह मेला बैलगाड़ी का मेला कहलाता है।
- ✓ शीतला माता की पूजा खण्डित प्रतिमा के रूप में की जाती है।

➢ **सकराय माता** – उदयपुरवाटी (नीम का थाना)
- ✓ खंडेलवालों की कुलदेवी।
- ✓ सकराय माता को फल, सब्जी, कंदमूल आदि उत्पन्न करने की शक्ति के कारण शाकंभरी कहा गया।

➢ **सच्चियाय माता** – ओसियां (जोधपुर)
- ✓ ओसवालों की कुलदेवी।

➢ **कंठेसरी माता** – आदिवासियों की देवी।

➢ **कैवाय माता** –
- ✓ किणसरिया गाँव (परबतसर) मंदिर का निर्माण राजा चच्च ने करवाया था।

➢ **आई माता** – बिलाड़ा (जोधपुर)

www.skresultpoint.com

✓ सिरवी (कलबी) समुदाय की देवी।
✓ बाबा रामदेवजी की शिष्या थी।
✓ इनके मंदिर को दरगाह/बढ़ेर (थान) कहा जाता है।
✓ मंदिर के दीपक की ज्योत से केसर टपकती है।

➢ **बाण माता** – उदयपुर।
✓ गुहिलों की देवी।

➢ **ज्वाला माता** – जोगनेर (जयपुर)
✓ खंगारोतों की कुल देवी।

➢ **त्रिपुरा सुंदरी माता (तुरताई माता)** – उमराई गाँव, तलवाड़ा (बाँसवाड़ा)
✓ पांचाल जाति की कुलदेवी।
✓ 18 भुजाओं वाली प्रतिमा पर श्रीयंत्र अंकित है।

➢ **अर्बुदा माता** – माउण्ट आबू (सिरोही)
✓ अधर देवी के नाम से प्रसिद्ध।
✓ राजस्थान की वैष्णो देवी।

➢ **अम्बिका माता** – जगत (सलुम्बर)
✓ इसे मेवाड़ का खजुराहो कहा जाता है।

➢ **हर्षद माता मंदिर** – आभानेरी (दौसा)
✓ यह मंदिर गुर्जर–प्रतिहारकालीन है।
✓ यह मंदिर मूल रूप से भगवान विष्णु का था।

➢ **सुंधा माता मंदिर** – जालौर
✓ यहाँ राज्य का पहला रोपवे स्थापित किया गया था।

➢ **धौलागढ़ माता** – अलवर।

➢ **लटियाल माता का मंदिर** – फलौदी।
✓ इनकी सवारी ऊँट की है।

➢ **चिरजा** – देवी की आराधना में गाये जाने वाले (करणी माता) भक्ति गीत।

राजस्थानी चित्रकला

✓ राजस्थानी चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 ई. में अपनी पुस्तक राजपुत पेंटिंग्स में किया।
✓ इन्होंने राजस्थानी चित्रशैली को चार स्कूलों में विभाजित किया।
  ○ मेवाड़
  ○ मारवाड़
  ○ ढूढ़ाड़
  ○ हाड़ौती
✓ राजस्थान के प्राचीनतम चित्र –
  ○ आधनिर्युक्ति वृत्ति
  ○ दस वैकालिका सूत्र चूर्णि
  ये दोनों चित्रित ग्रंथ जैसलमेर के जिनभद्र सूरि संग्रहालय में रखे हुए हैं।
  ये ताड़ के पत्तों पर चित्रित हैं।

❖ मेवाड़ी स्कूल –
✓ सबसे प्राचीन चित्रशैली।
✓ राजस्थानी चित्रशैली का उद्भव मेवाड़ से हुआ है।
✓ महाराणा कुंभा को राजस्थानी चित्रकला का जनक माना जाता है।
✓ मेवाड़ के प्राचीनतम चित्र –
  ○ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि – 1260 ई. का (राजा – तेजसिंह) चित्रकार – कमलचन्द्र।
  ○ सुपासहनम् चरियम – राणा मोकल चित्रकार – हीराचन्द

www.skresultpoint.com

✓ मेवाड़ चित्रशैली का स्वर्ण काल – जगतसिंह प्रथम का काल (1628 ई से 1652 ई)
✓ कलीला–दमना – पंचतंत्र की कहानियों के दो पात्र।
✓ जगतसिंह प्रथम ने उदयपुर के राजमहलों में चित्रकला विद्यालय 'चितेरों री आवेरी' की स्थापना की थी।
✓ इसे 'तस्वीरों रो कारखानो' एवं 'पोथी ग्रंथों का संग्रह' कहा जाता है।
✓ चित्रकार – साहिबद्दीन, नसीरूद्दीन, नुरूद्दीन, जगन्नाथ, मनोहर, कमलचन्द्र, हीरानन्द।
✓ चित्रकार साहिबद्दीन ने 1628 में रागमाला का चित्रण किया।
✓ विशेषताएँ – यहाँ पोथी ग्रंथों पर अधिक चित्रण हुआ।
✓ चित्र चोर पंचासिका का संबंध मेवाड़ चित्रशैली से है।

➢ **चावण्ड चित्रशैली** – मेवाड़ चित्रशैली की उपशाखा।
✓ इस चित्रशैली की शुरूआत महाराणा प्रताप के समय हुई।
✓ अमरसिंह प्रथम का काल इस चित्रशैली का स्वर्णकाल कहलाता है।
✓ अमरसिंह प्रथम के समय 1605 ई. में चित्रकार नसीरूद्दीन ने रागमाला का चित्रण किया।

➢ **देवगढ़ चित्रशैली** – राजसमंद।
✓ मेवाड़ स्कूल की उपशाखा।
✓ इस चित्रशैली की शुरूआत रावत द्वारकानाथ चुंडावत ने 1680 ई. में की थी।
✓ इस चित्रशैली को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. श्रीधर अंधारे को दिया जाता है।
✓ चित्रकार – कंवला, चौखा, बैजनाथ, बगता, नगा, हरचंद।
✓ अजारों की ओवरी, मोती महल, कपड़ द्वार – भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध।

➢ **नाथद्वारा शैली** –
✓ मेवाड़ स्कूल का भाग।
✓ राजसिंह प्रथम का शासनकाल इस चित्रशैली का स्वर्ण काल कहलाता है।
✓ यहाँ पिछवाइयों का अधिक चित्रण हुआ है।
✓ महिला चित्रकार – कमला व इलायची।
✓ पुरूष – भगवान, तुलसी, मुकुन्द, रामलिंगम।

❖ हाड़ौती स्कूल –

➢ **बूँदी चित्रशैली** –
✓ पशु–पक्षियों का सर्वाधिक चित्रण।
✓ वर्षा में नाचता हुआ मोर।
✓ राजा छत्रसाल ने चित्रकला विकास हेतु रंगमहल का निर्माण करवाया।
✓ राजा उम्मेदसिंह ने चित्रकला के विकास हेतु चित्रशाला का निर्माण करवाया था।
✓ जहाँगीर ने बूँदी के राजा रतनसिंह को चित्रकला प्रेम के कारण सरबुलन्दराय की उपाधि दी थी।
✓ चित्रकार – अहमद अली, रघुनाथ, सुरजन, साधुराम, श्रीकिशन।

➢ **कोटा चित्रशैली** –
✓ स्वर्णकाल – उम्मेदसिंह प्रथम का काल।
✓ महिलाओं को शिकार करते हुए दिखाया गया है।
✓ 1768 ई. में चित्रकार डालु ने रागमाला का चित्रण किया था।
✓ चित्रकार – नूर मोहम्मद, डालु, लच्छीराम।

❖ ढूंढ़ाड़ स्कूल –

➢ **आमेर चित्रशैली –**
✓ इस पर सर्वाधिक मुगल प्रभाव पड़ा।
✓ चित्रकार – मुरली, मुन्नालाल, हुकुमचन्द, पुष्पदत्त।

➢ **जयपुर चित्रशैली –**
✓ इस चित्रशैली की शुरूआत जयपुर स्थापना के साथ सवाई जयसिंह के समय हुई।
✓ स्वर्णकाल – सवाई प्रतापसिंह का शासनकाल।
✓ चित्रकार साहिबराम ने ईश्वरीसिंह का आदमकद फोटो (पोट्रेट) फोटो बनाया था।
✓ रामसिंह द्वितीय ने चित्रकला विकास के लिए मदरसा–ए–हूनरी कला विद्यालय की स्थापना की थी।
✓ इस चित्रशैली के चित्रकार हीरे–मोती, लाख एवं लकड़ी के टुकड़ों को जोड़कर चित्र बनाते थे जिसे मणिकुट्टीम कहा गया।
✓ विशेषताएँ – चित्र में पुरूष के चेहरे पर चेचक के दाग दिखाये गये है।
✓ सुरतखाना – चित्रकला से संबंधित विभाग।
इसकी स्थापना सवाई जयसिंह ने की थी।
✓ प्रमुख कलाकार –
मुहम्मद शाह – सवाई जयसिंह का दरबारी चित्रकार।
कृष्ण लीलाओं सें संबंधित चित्र बनाये थे।
अन्य चित्रकार – जगरूप, पोकर, हीरा, जीवण, राजु, गोपाल, चिमना, सांवला, केशु, मंगला, भवानी।

➢ **अलवर चित्रशैली –** ढूंढ़ाड़ स्कूल का भाग।
✓ स्वर्ण काल – राजा विनयसिंह।
✓ विनयसिंह के समय चित्रकार बलदेव एवं गुलाम अली ने शेख सादी की पाण्डुलिपि – 'गुलिस्ता' का चित्रण किया था।
✓ चित्रकार मूलचन्द एवं उदयराम ने हाथी दाँत पर चित्र बनाये थे।
✓ चित्रकार – बलदेव, सालिगराम, छोटेलाल, बक्शाराम, जमनादास।
✓ अंग्रेजी जीवनशैली का चित्रण हुआ है।

➢ **उणियारा चित्रशैली –** टोंक।
✓ चित्रकार – धीमा एवं मीरबक्श।

➢ **शेखावाटी चित्रशैली –**
✓ यह चित्रशैली भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।
✓ पणा – भित्ति चित्रों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए काम में ली गई पद्धति पणा कहलाती है।
✓ आलागीला – ताजा प्लास्टर की, की गयी चित्रकारी।
✓ इस कला को आरायश, मोराकशी, आलेखणा, फ्रेंस्को बूनो के नाम से जाना जाता है।
✓ शेखावाटी को ओपन एयर आर्ट गैलेरी कहा जाता है।

❖ **मारवाड़ स्कूल –**
➢ **जोधपुर चित्रशैली –**
✓ इस चित्रशैली की शुरूआत राव मालदेव के समय हुई।
✓ मारवाड़ का सबसे प्राचीन चित्र 'उतराध्यानसूत्र' है जो मालदेव के समय का है।
✓ मालदेव ने चित्रकला विकास के लिए चौखेलाव महलों का निर्माण करवाया था।
✓ 1623 में महाराणा गजसिंह के समय चित्रकार वीरजी भाटी ने रागमाला का चित्रण किया था।
✓ उजली–जेठवा, ढ़ोला–मारू एवं मूमल के चित्र बने हैं।
✓ पंचतंत्र का चित्रांकन मारवाड़ चित्रशैली में हुआ है।
✓ चित्रकार – वीरजी भाटी, दाना भाटी, छज्जू, सैफू, रतन जी भाटी।

➢ **अजमेर चित्रशैली –**
✓ मारवाड़ स्कूल का भाग।
✓ सावर, नांद एवं जूनियाँ ठिकानों का संबंध अजमेर चित्रशैली से है।
✓ चित्रकार – चाँद, तैयब, नवला, लालजी भाटी एवं रामसिंह भाटी।
✓ चित्रकार चाँद ने पाबूजी का चित्र बनाया था।
✓ महिला चित्रकार – साहिबा।

➢ **नागौर चित्रशैली –**
✓ मारवाड़ स्कूल का भाग।
✓ बुझे हुए (फीके) रंगों का प्रयोग।
✓ नायिका को झुकी हुई कमर वाली वृद्धा के रूप में दिखाया गया है।

➢ **जैसलमेर चित्रशैली –**
✓ यह एक स्थानीय चित्रशैली है।
✓ इस पर अन्य किसी बाहरी चित्रशैली का प्रभाव नहीं पड़ा।

➢ **किशनगढ़ चित्रशैली –**
✓ मारवाड़ स्कूल का भाग।
✓ इस चित्रशैली की शुरूआत राजा सावंतसिंह (नागरीदास) के समय हुई।
✓ इनका काल इस शैली का स्वर्णकाल कहलाता है।
✓ इस चित्रशैली को प्रसिद्धि दिलाने का कार्य एरिक डिक्शन एवं फैयाज अली ने किया।
✓ बणी–ठणी का चित्र – सावंतसिंह (नागरीदास) ने अपनी प्रेमिका बणी–ठणी (रसिक बिहारी) का चित्र चित्रकार मोरध्वज निहालचंद से बनवाया था।
✓ बणी–ठणी के नाक में बेसरी आभूषण चित्रित किया हुआ था।
✓ एरिक डिक्सन ने बणी–ठणी को 'भारत की मोनालिसा' कहा।
✓ 1973 में बणी–ठणी चित्र पर डाक टिकट जारी किया गया था।
✓ चित्रकार अमीरचन्द ने चाँदनी रात की संगोष्ठी नामक चित्र बनाया था।
✓ चित्रकार – मोरध्वज निहालचंद, अमीरचंद, धन्ना, भँवरा, लाडलीदास, सीताराम, सवाईराम, नानकदास।
✓ सावंतसिंह की मृत्यु वृंदावन (उत्तरप्रदेश) में हुई।

➢ **बीकानेर चित्रशैली –**
✓ मारवाड़ स्कूल का भाग।
✓ चित्रशैली की शुरूआत – रायसिंह के समय।
✓ स्वर्णकाल – अनूपसिंह का काल।
✓ इस चित्रशैली पर दक्षिणी भारतीय, ईरानी, चीनी चित्रशैलियों का प्रभाव पड़ा है।
✓ उस्ताकला एवं मथैरणा कला का संबंध बीकानेर से है।
✓ चित्रकार – रूकनुद्दीन, रामलाल, अलीरजा, हसन, मुन्नालाल, चन्दूलाल, जयकिशन, अबू हमीद, शाह मोहम्मद।
✓ रेत के धोरों का सर्वाधिक चित्रण बीकानेर चित्रशैली में है।
✓ यहाँ के चित्रकार चित्र के साथ में अपना नाम व वर्ष लिखते थे।

➢ **चित्रकला से संबंधित संस्थान**
✓ तूलिका – उदयपुर
✓ टखमण–28 – उदयपुर
✓ आयाम – जयपुर
✓ कलावृत्त – जयपुर

www.skresultpoint.com

✓ चितेरा – जोधपुर
✓ धोरा – जोधपुर

✓ भीलों का चितेरा – गोवर्धनलाल बाबा
✓ भैंसों का चितेरा – परमानन्द चौयल
✓ नीड़ का चितेरा – सौभाग्यमल गहलोत
✓ कुत्तों का चितेरा – जगन्नाथ मथोड़िया।

मुस्लिम आस्था स्थल

➢ **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती –**
✓ जन्म स्थान – संजरी (ईरान)
✓ ख्वाजा मोइनुद्दीन मोहम्मद गौरी के साथ पृथ्वीराज चौहान (III) के समय अजमेर आये थे।
✓ मोहम्मद गौरी ने ख्वाजा साहब को 'सुल्तान–उल–हिन्द' की उपाधि दी थी।
✓ ख्वाजा साहब की जीवनी – होली बायोग्राफी
✓ लेखक – वहीउद्दीन बेग।
✓ ख्वाजा साहब ने 'चिश्ती सिलसिले' की स्थापना की थी।

✓ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह – अजमेर।
- ख्वाजा साहब की दरगाह आने वाला प्रथम सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक था।
- पक्की मजार – इसका निर्माण मांडु के सुल्तान मोहम्मद खिलजी ने करवाया था।
- बुलन्द दरवाजा – दरगाह की सबसे पुरानी इमारत मांडु के सुल्तान मोहम्मद खिलजी ने 75 फीट ऊँचे बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया था।
- इस द्वार के पास दो बड़ी देग रखी हुई हैं।
  बड़ी देग – अकबर
  छोटी देग –जहाँगीर
- **उर्स –**
  रज्जब महीने की 1 से 6 तारीख तक।
  उर्स की शुरूआत भीलवाड़ा के गौरी परिवार द्वारा बुलन्द दरवाजे पर ध्वज चढ़ाने से होती है।
  यह भारत का सबसे बड़ा उर्स है।
- निजाम द्वार – दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार। इसका निर्माण हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली ने करवाया था। यहाँ पर दो बड़े नगाड़े है जो अकबर द्वारा भेंट किए गए।
- अकबर ने दरगाह की 14 बार जियारत की थी।
- अकबर ने दरगाह व्यवस्था के लिए 18 गाँव भेंट किए थे।
- मेवाड़ महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने दरगाह व्यवस्था के लिए 4 गाँव भेंट किए थे।
- मराठा शिवाजी के पौत्र राजा साहू प्रथम मराठा सरदार था जिसने ख्वाजा साहब की दरगाह के लिए नजर (भेंट) भेजी थी।

✓ अढ़ाई दिन का झोंपड़ा – अजमेर।
- यहाँ मूल रूप से विग्रहराज–चतुर्थ (बीसलदेव) द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे तुड़वाकर अढ़ाई दिन के झोंपडे का रूप दिया था।
- यहाँ पंजाबशाह का उर्स भरता है।

✓ हजरत शक्कर पीर बाबा – नरहड़ (झुंझुनूं)
- इन्हें नरहड़ के पीर एवं बागड़ के धणी कहा जाता है।
- यहाँ कृष्ण जन्माष्टमी के दिन उर्स भरता है।

✓ शेख हमीमुद्दीन नागौरी – नागौर।
- यह ख्वाजा साहब के शिष्य थे।
- ख्वाजा साहब ने इनको 'सुल्तान–ए–तारकिन' (संन्यासियों का सुल्तान) कहा था।

✓ काजी हमीमुद्दीन नागौरी – नागौर।
✓ इनका संबंध सुहरावर्दी संप्रदाय से है।

✓ हजरत मीरान की दरगाह – तारागढ़ दुर्ग, अजमेर।
✓ कबीरशाह की दरगाह – करौली
✓ चल–फिरशाह की दरगाह – चित्तौड़गढ़
✓ हम्मीमुद्दीन चिश्ती (मीठे शाह की दरगाह) – गागरोन, झालावाड़।
✓ अब्दुल्ला खान का मकबरा – अजमेर।
✓ अब्दुल्ला पीर का मकबरा – बाँसवाड़ा।
✓ चोटिला पीर की दरगाह – केरला स्टेशन (पाली)
✓ मस्तान पीर की दरगाह – सोजत (पाली)
✓ गजरा का मकबरा – धौलपुर
✓ बीबी जार जरीना का मकबरा – धौलपुर।
✓ उषा मस्जिद – बयाना (भरतपुर)

ट्रिक – जोधपुर में एक भूत 3G चला रहा है।
✓ एक मीनार – जोधपुर
✓ भूरे खान की मजार – जोधपुर
✓ गुलाम कलंदर का मकबरा – जोधपुर
✓ गुलाम खान का मकबरा – जोधपुर
✓ गमता गााजी का मकबरा – जोधपुर
✓ खुदाबख्श की दरगाह – सादड़ी (पाली)
✓ दाऊदी बोहरा संप्रदाय – गलियाकोट (डूंगरपुर)
✓ यहाँ सैय्यद फकरूद्दीन की मजार है।
इसे मजार–ए–फखरी कहा जाता है।

मंदिर स्थापत्य

➢ **मंदिर निर्माण शैलियाँ –**
✓ द्रविड शैली – दक्षिण भारत में निर्मित अधिकांश मंदिर।
✓ नागर शैली – उत्तरी भारत के अधिकांश मंदिर।
उपभाग – एकायतन शैली, पंचायतन शैली, भूमिज शैली एवं गुर्जर–प्रतिहार शैली
✓ राज्य में भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर – सेवाड़ी (पाली) के जैन मंदिर।
✓ बेसर शैली – द्रविड़ शैली एवं नागर शैली का मिला–जुला रूप।
✓ राज्य में गुप्तकालीन मंदिर – (तीसरी सदी से सातवीं सदी)
कसुआं का शिव मंदिर – कोटा
चार चौमा शिव मंदिर – कोटा
दर्रा के शिव मंदिर – कोटा।
शीतलेश्वर महादेव मंदिर – झालरापाटन (झालावाड़)
✓ राज्य में झालरापाटन (झालावाड़) से प्राचीनतम बौद्ध गुफाएँ प्राप्त हुई – गुनाई, विनायका, कौल्वी, हथियागौड़।

✓ गुर्जर प्रतिहारकालीन मंदिर – (आठवीं सदी से बारहवीं सदी)–
- आभानेरी का हर्षद माता मंदिर दौसा
- अम्बिका माता मंदिर – जगत (सलुम्बर)
- सास–बहू का मंदिर – नागदा (उदयपुर)
- ओसिया जोधपुर के सूर्य मंदिर, हरिहर मंदिर एवं महावीर स्वामी मंदिर।
- हर्षनाथ मंदिर – सीकर

www.skresultpoint.com

- राजोरगढ़ का शिव मंदिर – अलवर
- कामेश्वर महादेव मंदिर – आऊवा (पाली)
- सच्चियाय माता मंदिर – ओसियां (जोधपुर)
- सोमेश्वर शिव मंदिर – किराडू (बाड़मेर)
- आदिवराह मंदिर – आहड़ (उदयपुर)

प्रमुख मंदिर –

✓ बूढ़ादीत का सूर्य मंदिर – दिगोद (कोटा)
✓ विभीषण मंदिर – कैथुन (कोटा)
✓ मथुरेश मंदिर – कोटा
✓ भण्डदेवरा मंदिर – बाराँ
इन मंदिरों को हाड़ौती का खजुराहों कहा जाता है।
✓ फूलदेवरा – बाराँ।
- इस मंदिर को मामा–भाणजा का मंदिर कहा जाता है।
- इसके अलावा मामा–भाणजा का एक मंदिर डूँगरपुर जिले में भी है।
- मामा–भाणजा की छतरी – मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)।

✓ शीतलेश्वर महादेव मंदिर – झालरापाटन (झालावाड़)
- यह राज्य का प्रथम तिथि अंकित (689 ई.) मंदिर है।

✓ सूर्य मंदिर – झालरापाटन (झालावाड़)
- कर्नल जेम्स टॉड ने इस मंदिर को चारभुजा का मंदिर कहा था।
- इस मंदिर को सात सहेलियों का मंदिर भी कहा जाता है।
- इस मंदिर को पद्मनाभ मंदिर भी कहा जाता है।
- इस मंदिर में भगवान सूर्य को घूटनों तक जूते पहने हुए दिखाये गये है।
- यहाँ की सूर्य प्रतिमा 'सप्तरथी' है।
- यह प्रतिमा सूर्य एवं विष्णु के सम्मिलित भाव वाली है।

✓ उषा मंदिर – बयाना (भरतपुर)
✓ त्रिनेत्र गणेश मंदिर – रणथंभौर (सवाई माधोपुर)
✓ घुश्मेश्वर महादेव मंदिर – शिवाड़ (सवाई माधोपुर)
- यहाँ भगवान शिव का 12वाँ एवं अंतिम ज्योतिर्लिंग स्थापित है।

✓ गोविन्ददेवजी का मंदिर – जयपुर।
- यह मंदिर माधवगौड़ीय सम्प्रदाय की प्रधान पीठ है।

✓ जगत् शिरोमणि मंदिर – आमेर (जयपुर)
- आमेर के राजा मानसिंह की रानी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की याद में मंदिर बनवाया।
- यहाँ पर मीराँ बाई द्वारा पूजित भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा स्थापित है।
- इस मंदिर के सामने गरूड़ की छतरी बनी हुई है।

✓ देवयानी तीर्थ – सांभर (जयपुर)
- तीर्थों की नानी

✓ कल्कि मंदिर – जयपुर।
✓ लोहार्गल तीर्थ स्थल – झुंझुनूं।
- यहाँ की 24 कोसी परिक्रमा प्रसिद्ध है।
- इसे मालखेत जी की परिक्रमा भी कहते हैं।

✓ खाटूश्याम जी का मंदिर – सीकर।
- यहाँ महाभारतकालीन पात्र बर्बरीक की पूजा होती है।

✓ तीजा–माँगी का मंदिर – जोधपुर।
- निर्माण – मानसिंह की रानी प्रतापकुंवरी द्वारा।

✓ हर्षनाथ मंदिर – सीकर।
- इस मंदिर का निर्माण चौहान राजा गुवक प्रथम ने करवाया था।

✓ किराडू मंदिर – बाड़मेर।
- इन मंदिरों को राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है।

www.skresultpoint.com

- गुर्जर–प्रतिहार शैली में निर्मित अंतिम भव्य मंदिर।
- यहाँ सोमेश्वर महादेव मंदिर दर्शनीय है।

✓ ब्रह्मा मंदिर – आसोतरा (बाड़मेर)
✓ चुंगी तीर्थ – जैसलमेर
✓ परशुराम महादेव मंदिर – सादड़ी (पाली)
- इसे राजस्थान का अमरनाथ कहा जाता है।

✓ अचलेश्वर महादेव मंदिर – अचलगढ़ (सिरोही)
- इस स्थल को भंवराथल कहा जाता है।

✓ रसिया बालम मंदिर – देलवाड़ा (सिरोही)
✓ ऋषि वशिष्ठ मंदिर – माउण्ट आबू (सिरोही)
✓ ब्रह्मा मंदिर – पुष्कर (अजमेर)
- इसका निर्माण गोकुलचन्द पारिक ने करवाया था।
- इस मंदिर को भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया है।

✓ रंगनाथ जी का मंदिर – पुष्कर (अजमेर)
✓ गायत्री मंदिर – पुष्कर (अजमेर)
✓ सावित्री मंदिर – पुष्कर (अजमेर)
✓ बारह देवरा मंदिर – जहाहजपुर (शाहपुरा)
✓ डिग्गी कल्याणजी का मंदिर – टोंक
- यह भगवान विष्णु का मंदिर है।
- इस मंदिर का निर्माण राजा डिग्वा ने करवाया था।
- यहाँ मुस्लिम समुदाय के लोग इनकी पूजा 'कलहपीर' के रूप में करते हैं।

✓ चारभुजा मीराँबाई का मंदिर – मेड़ता (नागौर)
✓ जगदीश मंदिर – उदयपुर।
- इस मंदिर का निर्माण मेवाड़ महाराणा जगतसिंह प्रथम ने करवाया था।
- शिल्पी – अर्जुन, भाणा एवं मुकुन्द।
- इस मंदिर को 'सपनों में बना हुआ मंदिर' कहा जाता है।

✓ विष्णु मंदिर – जावर (सलुम्बर)
- प्राचीन नाम – योगिनी पट्नम (प्रकाश पट्नम)
- निर्माण – महाराणा कुंभा की पुत्री रमा बाई (वागीश्वरी) ने करवाया था।
- शिल्पी – ईश्वर
- रमाबाई प्रसिद्ध संगीतज्ञ थी।

✓ बेणेश्वर धाम – नवा टापरा गाँव, डूँगरपुर।
- सोम, माही एवं जाखम नदियों के संगम पर स्थित।
- इस मंदिर की स्थापना संत मावजी ने की थी।
- यह मेला 'आदिवासियों की कुंभ' कहलाता है।
- बेणेश्वर धाम में खंडित शिवलिंग की पूजा होती है।

✓ बाडोली के शिव मंदिर – रावतभाटा, चित्तौड़गढ़
- यहाँ के मंदिरों में घाटेश्वर महादेव मंदिर प्रमुख है।
- यह गुर्जर–प्रतिहार कालीन मंदिर है।
- इस मंदिर को प्रकाश में लाने का श्रेय कर्नल जेम्स टॉड को है।

✓ साँवलिया सेठ मंदिर – मंडफिया (चित्तौड़गढ़)
✓ कालिका माता मंदिर – चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- यह मंदिर मूल रूप से सूर्य मंदिर था।

✓ सिरोही से सर्वाधिक सूर्य मंदिर एवं प्रतिमाएँ मिली हैं।
✓ त्रिभुवननारायण मंदिर – चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- इसका निर्माण परमार राजा भोज ने करवाया था।
- इस मंदिर का पुनर्निर्माण मोकल ने करवाया था।
- इसलिए इसे मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर कहा जाता है।

✓ चारभुजा मंदिर – गढ़बोर (राजसमंद)
- इसे 'मेवाड़ का बद्रीनाथ' कहा जाता है।

✓ भंवर माता का मंदिर – छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)

- ✓ हरणी महादेव मंदिर – भीलवाड़ा
- ✓ सहस्रबाहु (सास–बहू) मंदिर – नागदा (उदयपुर)
  - ○ यहाँ भगवान विष्णु की प्रतिमा है।
- ✓ गेपरनाथ महादेव मंदिर – कोटा।
- ✓ सुहवेश्वर महादेव मंदिर – मेनाल (भीलवाड़ा)
  - ○ निर्माण – चौहान राजा पृथ्वीराज द्वितीय ने करवाया था।
- ✓ रावण मंदिर – मंडोर (जोधपुर)
- ✓ कुंभश्याम मंदिर – चित्तौड़गढ़
- ✓ केशवराय मंदिर – केशवरायपाटन (बूँदी)
  - ○ यह भगवान विष्णु का मंदिर है।

➢ **जैन मंदिर –**

- ✓ ऋषभदेवजी/आदिनाथ जैन मंदिर – धुलैव (उदयपुर)
  - ○ इन्हें केसरियानाथजी एवं कालिया बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
- ✓ रणकपुर के जैन मंदिर – रणकपुर (पाली)
  - ○ यहाँ के मंदिरों का निर्माण महाराणा कुंभा के समय धरणकशाह पोरवाल ने करवाया था।
  - ○ शिल्पकार – दैपाक।
  - ○ यह मंदिर मथाई नदी के किनारे स्थित है।
  - ○ यह मंदिर 1444 खंभों पर बना हुआ है इसलिए इसे खंभों का अजायबघर कहा जाता है।
  - ○ यह मंदिर आदिनाथजी को समर्पित है।
- ✓ देलवाड़ा के जैन मंदिर – माउण्ट आबू (सिरोही)
  - ○ यहाँ कुल 05 मंदिर हैं।

1. विमलवशही मंदिर – 1030–31
   - ○ निर्माण – गुजरात के चालुक्य राजा भीम प्रथम के मंत्री विमलशाह ने करवाया था।
   - ○ शिल्पी – कीर्तिधर
   - ○ यह मंदिर ऋषभदेवजी को समर्पित है।
2. लूणवशही मंदिर –
   - ○ इस मंदिर का निर्माण 1230–31 ई. में गुजरात के चालुक्य राजा वीर धवल के मंत्री वास्तुपाल एवं तेजपाल ने शिल्पकार शोभनदेव की देखरेख में करवाया था।
   - ○ यह मंदिर जैन तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है।
3. पीतलहर मंदिर –
   - ○ यहाँ 108 मण पीतल की ऋषभदेवजी की प्रतिमा है।
4. पार्श्वनाथ जी जैन मंदिर
5. महावीर स्वामी मंदिर।

- ✓ लोद्रवा के जैन मंदिर – जैसलमेर।
- ✓ मूसाला महावीर जी मंदिर – घाणेराव (पाली)
- ✓ चूलगिरी जैन मंदिर – जयपुर।
- ✓ महावीर स्वामी मंदिर – करौली।
  - ○ यह मंदिर गंभीर नदी के किनारे स्थित है।
  - ○ यहाँ चैत्र शुक्ला–13 के दिन मेला भरता है।
  - ○ इस मेले के दौरान जिनेन्द्र रथ यात्रा का आयोजन किया जाता है।
- ✓ नाकोड़ा के जैन मंदिर – मेवानगर, (बालोतरा)
  - ○ यहाँ पार्श्वनाथ जी एवं भैरवनाथ जी का मंदिर बना हुआ है।
- ✓ भांडाशाह जैन मंदिर – बीकानेर
  - ○ इस मंदिर को घी वाले मंदिर के नाम से जाना जाता है।
  - ○ यह मंदिर जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ को समर्पित है।
- ✓ ओसियां के जैन मंदिर – जोधपुर।
  - ○ यहाँ गुर्जर–प्रतिहारकालीन सबसे प्राचीन महावीर स्वामी मंदिर है।
- ✓ सोनीजी की नसियाँ – अजमेर।
  - ○ इस मंदिर का एक भाग स्वर्ण नगरी हॉल के नाम से जाना जाता है।
  - ○ यह मंदिर ऋषभदेवजी को समर्पित है।
  - ○ इसका निर्माण मूलचन्द सोनी ने करवाया था।

www.skresultpoint.com

राजस्थानी साहित्य

➢ **महत्वपूर्ण रचनाएँ –**

- ✓ पृथ्वीराज रासौ – चन्दबरदाई (पृथ्वीभट्ट वलादि)
- ✓ बीसलदेव रासौ – नरपति नाल्ह
- ✓ विजयपाल रासौ – नल्लसिंह
- ✓ खुमाण रासौ – दलपत विजय
- ✓ कायम खान रासौ – जान कवि
- ✓ हमीर रासौ – सारंगधर (संस्कृत भाषा)
- ✓ हमीर रासौ – जोधराज (अहीरवाटी बोली)
- ✓ अचलदास खिंची री वचनिका – शिवदास गाडण
- ✓ मुहणौत नैणसी री ख्यात – मुहणौत नैणसी
- ✓ मुंशी देवीप्रसाद ने मुहणौत नैणसी को 'राजपूजाने का अबुल फजल' कहा था।
- ✓ बाँकीदास री ख्यात – बाँकीदास
- ✓ दयालदास री ख्यात – दयालदास (बीकानेर राज्य का इतिहास)
- ✓ वीर मायण – बादर ढ़ाढ़ी।
- ✓ भरतेश्वर बाहुबली घोर – वज्रसेन सूरि।
- ✓ कान्हड़देव प्रबंध – पदमनाभ
- ✓ हंसावली – असाइत

➢ **दुरसा आढ़ा –** अकबर का दरबारी
'माही एड़ा पूत जण जेड़ा राणा प्रताप'

- ✓ रचनाएँ –
  - ○ विरूद्ध छिहतरी – इसमें महाराणा प्रताप का गुणगान किया गया है।
  - ○ किरतार बावनी
- ✓ सूरज प्रकाश – कवि करणीदान (जोधपुर के राजा अभयसिंह के दरबारी)
- ✓ एकलिंग महात्म्य – कान्हा व्यास
  - ○ यह संस्कृत भाषा का ग्रन्थ है।
- ✓ हमीर हठ – चंद्रशेखर
- ✓ सुर्जन चरित्र – चंद्रशेखर
- ✓ देशदर्पण – कवि शंकरदान सामौर

➢ **ईसरदास बारहठ –** (भादरेस गाँव, बाड़मेर)
  - ○ हाला झाला री कुण्डलियाँ
  - ○ हरिरस
  - ○ देवयाण

➢ **शिवचन्द्र भरतिया –** डीडवाना।
रचनाएँ –
  - ○ केसर विलास – राजस्थानी का प्रथम नाटक।
  - ○ कनक सुंदर – राजस्थानी का प्रथम उपन्यास।
  - ○ विश्रांत प्रवास – राजस्थानी की प्रथम कहानी।

- ✓ सेनाणी, चंवरी – मेघराज मुकुल
- ✓ लू, बादली, डफर – चन्द्रवीरसिंह बिरकाली
- ✓ राधा, बोल भारमली – सत्यप्रकाश जोशी

➢ **नथमल जोशी –** बीकानेर।

- आभै पटकी, एक बीनणी दो बींद
- मोलायोड़ी लाडी
- कंवारी परणयोड़ी
- धोरों रो धोरी –

यह रचना एलपी टेस्सीटोरी के संबंध में लिखी।

➢ **कन्हैया लाल सेठिया** – सुजानगढ़ (चुरू)

✓ प्रथम काव्य रचना – वनफूल

✓ अग्निवीणा रचना के लिए इन पर मुकदमा चला था।

✓ रचनाएँ
- धरती धौरा रीं
- जमीन रो धणी कुण
- पाथल–पीथल (महाराण प्रताप–पृथ्वीराज राठौड़)
- घर कूँचा घर मंझला
- मींझर
- मायड़ रो हेलो

➢ **एलपी टेस्सीटोरी**

✓ एलपी टेस्सीटोरी ने पश्चिमी राजस्थान का व्याकरण एवं चारण साहित्य लिखा था।

✓ एलपी टेस्सीटोरी का कार्य क्षेत्र बीकानेर था।

✓ इन्होंने पृथ्वीराज राठौड़ को 'डिंगल का हैरोस' कहा था।

➢ **लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत** – मेवाड़

✓ रचनाएँ
- लव स्टोरी ऑफ राजस्थान
- टाबरा री बाताँ
- के रे चकवा बात
- देवनारायण जी बगड़ावत की कथा

✓ लक्ष्मी कुमारी चूंड़ावत ने रूसी कथाओं का 'गजबण' के नाम से राजस्थानी में अनुवाद किया।

✓ इसलिए इन्हें सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार दिया गया।

✓ फ्रांसिस टेप्ट ने 'फ्रॉम पर्दा टू द पीपल' के नाम से लक्ष्मी कुमार चूड़ावत की जीवनी लिखी थी।

✓ राजपूत जीवन संध्या – रमेशचन्द्र दत्त

✓ गलालैंग वीर काव्य – अमरनाथ जोगी

✓ अबलाओं का इंसाफ – उपन्यास – अंबिका दत्त व्यास
राजस्थान में हिन्दी भाषा का प्रथम उपन्यास।

✓ बाथों में भूगोल – हरीश भदाणी

✓ मोहनजोदड़ो – ओम थानवी

✓ रेंगती हैं चींटियाँ – जबरनाथ पुरोहित

✓ सोनो निपजे रेत में – गजानन वर्मा

✓ ढ़ाणी रा आदमी – जयसिंह नीरज

✓ पागी, कावड़, झुरावो – चन्द्रप्रकाश देवल (उदयपुर)

✓ हूँ गौरी किण पीव री – यादवेन्द्र शर्मा

✓ हाँ चाँद मेरा है – हरिराम मीणा

✓ धुणी तपे तीर – हरिराम मीणा

✓ रिन्दरोही – अर्जुन देव चारण

✓ आँख हिये रा हरियल सपना – आईदान सिंह भाटी

✓ मेहकती काया – अन्नाराम सुदामा

✓ मुळकती धरती – अन्नाराम सुदामा

✓ आँधे ने आँख्या – अन्नाराम सुदामा

✓ पिरोळ में कुत्ती ब्याई – अन्नाराम सुदामा

✓ उकळती धरती उफणतो आभौ – अब्दुल वहीद 'कमल'

✓ घरौंदा [illegible] – रांगेय राघव

➢ **सूर्यमल्ल मिश्रण** – हिरणा गाँव, बूँदी।

✓ बूँदी के राजा रामसिंह के दरबारी कवि
- प्रथम रचना – रामरंजाट
- वंश भास्कर – इसमें बूँदी राज्य का इतिहास लिखा गया था।
- वीर सतसई – इसमें 1857 क्रांति के समय का इतिहास मिलता है। ''इला न देणी आपणी ....।''
- सती रासौ (बलवंत विलास)
- छंद मयूख

➢ **विजयदान देथा (बिज्जी)** – बोरूंदा (जोधपुर)

रचनाएँ –
- बातां री फुलवारी –
  इसके 14 भाग हैं।
  इसके 10वें भाग के लिए इन्हें केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था।
- दुविधा
- केंचुली
- तिडोराव
- अलेखूं हिटलर
- कबु रानी
- अनोखा पेड़
- चरणदास चोर

✓ दुविधा एवं चरणदास चोर रचनाओं पर फिल्में बनाई गई है।

➢ **कवि राजा श्यामलदास** – मेवाड़।

✓ वीर विनोद – इस ग्रंथ में मेवाड़ राज्य का इतिहास मिलता है।

✓ इन्हें इतिहास लेखन की जिम्मेदारी महाराणा शंभू सिंह ने दी थी।

✓ महाराणा सज्जनसिंह ने श्यामलदास को 'कवि राजा' की उपाधि एवं आर्थिक सहयोग भी दिया था।

➢ **सीताराम लालस**

✓ सीताराम लालस ने राजस्थानी भाषा का वृहद् शब्दकोष तैयार किया था।

www.skresultpoint.com